परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

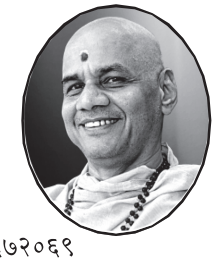

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, दूरमुद्रणः (०२०) २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट : www.dharmashree.org

वर्ष १५ अंक १ फाल्गुन, युगाब्द ५११८ त्रैमास मार्च २०१६

संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काले,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
पं. अशोक पारीक,
श्री. शांतनु रिठे,
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
श्री. राहुल मारुलकर, पुणे
मुद्रक :
मंदार प्रिंटर्स,
७५६, कसबा पेठ, पुणे ११.
दूरभाष :(०२०) २४५७६१४२
mandarprinters@gmail.com

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. मन और जगत
१०. ऐसी हो प्रभु दर्शन की प्यास!
११. सनातन धर्म और श्री अरविन्द!
१४. कैसे मनाएं राम जन्मोत्सव?
१५. निरक्षर श्रद्धालु भक्त पर ग्रंथकृपानुभूति
१७. वेदश्री तपोवन का शिलान्यास सम्पन्न
१८. संत परम्परा के नवीन आदर्श : संत तुकाराम!
२०. सागरनारायण की गोद में कथा श्रवण का आनन्द!
२२. गुरुवायुर कथा ज्ञानयज्ञ में जन्मोत्सव संपन्न।
२४. कोलकाता में श्रीमद्‌भागवत कथा का दिव्य आयोजन सम्पन्न
२६. भारतीय साहित्यसभा का आरंभ
२७. नासिक जिले की सभी शासकीय शालाओं में प्रज्ञासंवर्द्धन का प्रशिक्षण
३१. प्रचलित नववर्ष उत्सव, लखनऊ
३२. सच्चे ब्राह्मणत्व का पालन करने वाले संत एकनाथ
३४. श्रीनाथ शास्त्री जी पुराणाचार्य (विनम्र श्रद्धांजलि)
३५. सिंगापुर कथा ज्ञान यज्ञः एक अनुभव!
वेद वार्ता :- १९. घन पारायण, नागपुर
वेदविद्यालय :- २५. पानीपत, कोलकाता
गीता परिवार :- २८. नासिक, मुम्बई, संगमनेर, आर्वी, मानवत, दिल्ली, जयसिंगपुर

★ आवश्यक सूचना ★

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेदविद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''**धर्मश्री**'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498, फैक्स : 0145-2662811
ई-मेल : bhalchandravyas43@gmail.com

सूचना

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
– संपादक

धर्मश्री के इस अंक के यजमान
स्व. अश्विनजी राठी की स्नेहस्मृति में श्रीमती मीनादेवी राठी परिवार, मदुरै
साभिनंदन धन्यवाद !

संपादकीय

'धर्मश्री' त्रैमासिक पत्रिका का एक प्रमुख उद्देश्य प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज द्वारा प्रेरित विविध गतिविधियों से सभी पाठकों को अवगत कराना है। अतः हर अंक में इसी दिशा में वृत्त प्रसिद्ध किये जाते हैं। परंतु पिछले अंक के पश्चात् घटनाक्रम में मानो बाढ सी आयी।

सर्वप्रथम एवं सबसे महत्त्वपूर्ण समाचार यह कि चिरप्रतीक्षित वेदश्री तपोवन के निर्माण कार्य का शिलान्यासपूर्वक प्रारंभ हुआ। अब शीघ्र ही प.पू. स्वामी जी का स्वप्न साकार हो जाएगा।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा प्रेरित वेदविद्यालय संपूर्ण देश में विस्तारित हो रहे हैं। इसी शृंखला में गुजरात के कच्छ क्षेत्र में अंजार गाँव में दिसंबर माह में गायत्री वेदविद्यालय का शुभारंभ हुआ। अभी फरवरी मास में वडोदरा में स्वामी गोविंददेव गिरि वेदविद्यालय का शुभारंभ हुआ।

गत तीन वर्षों से मणिुपर के चार हजारे स्थित मणिपुर वेदविद्यापीठ नाम से अलंकृत वेदविद्यालयको निजी भवन की अतीव आवश्यकता थी। उस हेतु भूमि भी संपादित हुई थी। अब आनंददायी समाचार यह है कि जगद्विख्यात योगऋषि स्वामी रामदेवजी महाराज ने इस विद्यालय को दो करोड रुपयों की दानराशि से कृपान्वित किया है।

इधर महाराष्ट्र में पुणे के समीप संत तुकाराम महाराज की लीला भूमि श्री क्षेत्र देहू में प.पू. स्वामीजी की प्रेरणा से गाथा मंदिर के प्रांगण में समर्थ स्वामी रामदास साधक निवास का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर बढ रहा है। मार्च महिने में तुकाराम दूज के समारोह में इसका लोकार्पण संपन्न होगा। प.पू. स्वामीजी के आवाहनपर उदार दानदाताओंद्वारा प्राप्त सहयोग से निर्मित यह भवन निःसंदेह देहू तीर्थ का एक प्रमुख आकर्षण बनेगा। इसी के साथ जो पाठकगण महाराष्ट्र के गत शती के सांस्कृतिक इतिहास से परिचित है उनके लिए श्री क्षेत्र देहू में समर्थ रामदासजी के नामसे मंडित भवन यह एक बडी उपलब्धि प्रतीत होगी।

ऐसा दिखाई देता है कि ये सारी घटनाएँ आनेवाले परिवर्तनपूर्ण दिनों के प्रसाद चिन्ह हैं।

योगवासिष्ठ (१२)

मन और जगत्

मोक्ष-पथ पर अग्रसर होने के लिए साधक को जहाँ एक ओर अपनी 'देहात्म-बुद्धि' (स्वयं को देह ही समझना) का त्याग अनिवार्य है; वहीं दूसरी ओर उस जगत् को समझना भी आवश्यक है, जिसमें यह देह विचरण करती है।

विगत अंक में हमने जगत् का विश्लेषणात्मक विवेचन देखा- इस अंक में प.पू. गुरुदेव 'मन से जगत् का क्या संबंध है'; इस पर प्रकाश डाल रहे हैं। - **संपादक**

महर्षि वसिष्ठ जी ने जगत् का स्वरूप प्रस्तुत करते हुए कहा कि ''हे राम, यह जगत् केवल मनोविलास का परिणाम है। यह सब वासना का ही खेल है। उत्पत्ति प्रकरण, स्थिति प्रकरण एवं उपशम याने उसके लय का विचार किया जाता है। यह विचार प्रस्तुत करते समय यह प्रतिपादित किया गया है कि जगत् की उत्पत्ति वासनाओं के कारण ही होती है। वासनाएँ कर्मों के कारण वृद्धिंगत होती हैं, कर्म के ही साथ-साथ अंतःकरण को स्पर्श करने वाले राग-द्वेषों के कारण भी वे बढ़ती हैं। प्रलयकाल में सब कुछ समाप्त हो जाने के बाद; शरीर समाप्त हो जाने के बाद, सारी योनियों के शरीर समाप्त हो जाने के बाद भी ये वासनाएँ आकाश तत्त्व में ज्यों की त्यों रह जाती हैं। और फिर, आकाश से वायु, वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से अन्न और अन्न से जीवसृष्टि साकार होती जाती है।

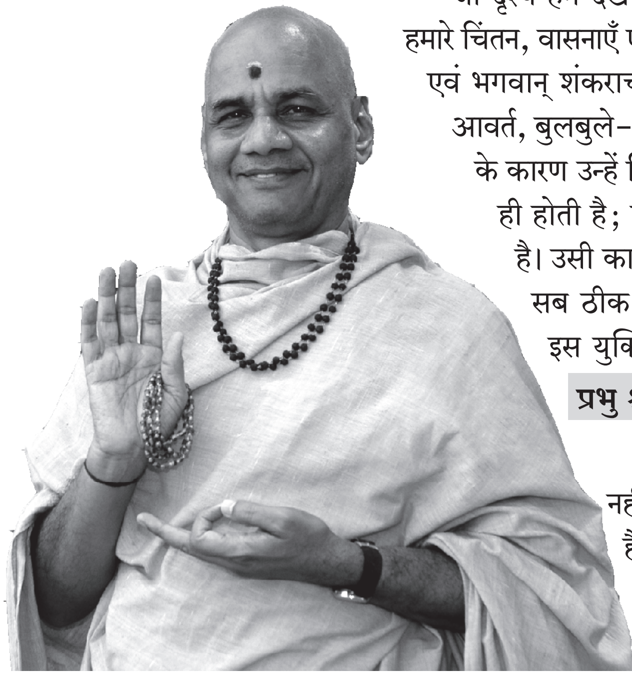

जो दृश्य हम देखते हैं, वह हमारे ही चिंतन का घनीभूत परिणाम है। हमारे चिंतन, वासनाएँ एवं मनोभावों का वह परिणाम होता है। योगवासिष्ठकार एवं भगवान् शंकराचार्य बार-बार एक दृष्टान्त दिया करते हैं - तरंग, आवर्त, बुलबुले- सब जल के विभिन्न रूप हैं। पानी के विभिन्न आकारों के कारण उन्हें भिन्न-भिन्न नाम दिए गए। उसी तरह सद्वस्तु तो एक ही होती है; परंतु चित्-तत्त्व भिन्न-भिन्न आकारों में प्रकट होता है। उसी का यह विलास है, इसीलिए जगत् चिद्विलास है। यह सब ठीक है। परंतु वासनाओं से जगत् की उत्पत्ति हो गई, इस युक्ति से क्या आप सहमत हैं?''

प्रभु श्रीरामचंद्र जी की आशंका

प्रभु श्रीरामचंद्र जी ने कहा, ''नहीं, मैं यह बात नहीं मान सकता। मन से जगत की निर्मिति कैसे हो सकती है? हाँ, यदि आप कहेंगे कि कोई एक देवता है, उसने इस जगत् की निर्मिति की है, तो वह बात मानी जा सकती है, परंतु आप तो देवता, ईश्वर को मानते

ही नहीं हैं। जगत् मनोनिर्मित है, यह विचार मेरे गले नहीं उतरता।'' वसिष्ठ जी इस ढीठ वक्तव्य से नाराज नहीं हुए। खुले मन से आशंका सामने रखना, ज्ञान के लिए आवश्यक होता है। उन्होंने कहा, ''तुम जो कहते हो सो ठीक है। यह विचार सरलता से आकलन होने वाला नहीं है। सहजता से गले उतरने वाला नहीं है। उसके लिए एकान्त-सेवन की आवश्यकता है, मनन-चिंतन की आवश्यकता है। वास्तव में तुम्हारा प्रश्न सच्चा है- क्या मन वस्तुओं को निर्माण कर सकता है? मैं ठीक कह रहा हूँ न?''

जगत् की उत्पत्ति वासनाओं के कारण ही होती है। वासनाएँ कर्मों के कारण वृद्धिंगत होती हैं, कर्म के ही साथ-साथ अंतःकरण को स्पर्श करने वाले राग-द्वेषों के कारण भी वे बढ़ती हैं। प्रलयकाल में सब कुछ समाप्त हो जाने के बाद, शरीर समाप्त हो जाने के बाद, सारी योनियों के शरीर समाप्त हो जाने के बाद भी ये वासनाएँ आकाश तत्त्व में ज्यों की त्यों रह जाती हैं। और फिर, आकाश से वायु, वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से अन्न और अन्न से जीवसृष्टि साकार होती जाती है।

मन की वस्तु-निर्मिति

वसिष्ठ जी ने आगे कहा, ''हे श्रीराम, मन की चार स्थितियाँ होती हैं - जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति, एवं तुरीय। जागृति, स्वप्न, गाढ़ी नींद एवं समाधि - ये चार अवस्थाएँ हैं। अब जरा सोचो। मैंने सपना देखा। सपने में मैंने देखा कि मैंने भरपेट गुलाबजामुन खाए हैं। अब 'गुलाब जामुन' कोई विशेष महत्त्व नहीं रखता। तुम अपनी पसन्द की किसी भी वस्तु की कल्पना करो। स्वप्न के 'गुलाबजामुन' बहुत सुन्दर, बहुत स्वादिष्ट थे। मैंने उन्हें भर-पेट भी खा लिया। अब मुझे बताओ कि 'गुलाब जामुन' किसने बनाए थे? उसके लिए क्या मैं आवश्यक सामग्री साथ में रखकर सोया था? यदि हाँ, तो मैंने वह सामग्री किस दुकान से खरीदी थी? मैंने तो वे गुलाब-जामुन खाए थे। उसका स्वाद चखा था। भरपेट खाए थे मैंने। यह बात समझ लो कि वे गुलाब-जामुन, उसकी सारी सामग्री, उसका कर्ता, भोक्ता सब कुछ मेरा 'मन' ही तो था। सामग्री न होते हुए भी गुलाब-जामुन बन गए थे। गुलाब-जामुन थे ही नहीं, फिर भी मैंने खाए थे। न खाते हुए भी मैंने उनका स्वाद चखा था। न खाए हुए गुलाब-जामुनों से मेरा पेट भर गया था। यह सब मेरे मन की ही अद्भुत निर्मिति है।

इस विवेचन पर बुद्धिमान आदमी निश्चित ही प्रश्न करेगा - प्रश्न नहीं भी किया तो उसके मन में यह विचार निश्चित रूप से उठेगा कि 'गुलाब-जामुन' या कोई भी चीज यदि मन निर्माण कर सकता है तो वह केवल स्वप्न में ही क्यों? जागते हुए भी मन, इसी प्रकार; किसी भी सामग्री के बिना, गुलाब-जामुन निर्माण कर पाए, वस्तु का निर्माण कर पाये, तो हमारे कितने कष्ट बच जाएँगे।

स्वप्न की निर्मिति सच्ची या झूठी

मूलतः स्वप्न ही मिथ्या होता है, झूठा होता है। अतः उसमें हुई निर्मिति,कर्तृत्व, भोक्तृत्व सभी झूठ ही होता है। परंतु स्वप्न सच नहीं है, हम जो देख रहे हैं वह केवल सपना है, उसमें कुछ भी युक्तिसंगत नहीं है, ये सारी बातें जाग जाने पर स्पष्ट हो जाती हैं। स्वप्न समाप्त होने के बाद पता चलता है कि यह सपना था। स्वप्न में ऐसा कभी नहीं लगता कि मैं जो देख रहा हूँ वह केवल सपना है, झूठ है। सपने का झूठापन जानने के लिए जागृति आवश्यक होती है।

यहाँ भी वैसे ही है। यहाँ तो स्वप्न ही है मगर मैं जग गया हूँ, ऐसा जो लगता है, वह भी सपना ही होता है। शास्त्रकार कहते हैं कि अज्ञान निद्रा है। इस निद्रा के कारण स्वप्न दिखाई देते हैं। आभास होते हैं। एक मन ही नाना पदार्थ बन जाता है। हम सपने में सुख-दुःख-डर का अनुभव करते हैं। उसी प्रकार हम अपने 'स्वरूप' में अज्ञान से निद्रित होते हैं। वास्तव में एक ही चैतन्य होता

है, फिर भी हमें विश्व दिखाई देने लगता है! जीवन में सैकड़ों सुख-दुःखों का हम अनुभव लेते हैं! हमें लगता है कि यह सब सच ही है।

सपने में मैंने देखा कि मेरे दरवाजे पर हाथी झूल रहा है। 'कां स्वप्नीचा भद्रजाति!' भद्रजाति याने हाथी। सपने में हाथी मिल गया। 'किं स्वप्नीची तरुणांगी............ मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि एक अत्यंत सुंदर युवती मेरे द्वारे आकर मुझसे कह रही है कि मैं आपसे मिलने के लिए आई हूँ। मगर यह सब कुछ होता है 'सपने' में, उस सपने का सुख सपने में ही रह जाता है। जागने पर उसमें कोई तुक नहीं होता! उस सुख की; सुख-भोग देने की सामर्थ्य, जागृतावस्था में समाप्त हो जाती है? क्या इस कारण दुःख होता हैं फिर, हम क्यों जगें? क्या ऐसा लगता है?

वैसे ही कभी-कभी सपने में दुःख भी होता है, डर भी लगता है। मैंने सपने में देखा कि किसी ने मुझ पर पिस्तौल से गोली दागी है।गोली मेरी जांघ में घुस गई। हड्डी टूट गई। खून बहने लगा। मैं लँगड़ाने लगा। अब इस दुःख पर दवा क्या हो सकती है? 'स्वप्नाचिया घावा, औषध चेवोचि धनंजया!' (हे धनंजय, स्वप्न के घाव की जागृति ही दवा है)। उस दुःख का कष्ट जगते ही समाप्त हो जाता है।

इसी कारण जीवन के सुख-दुःख अज्ञान निद्रा के कारण होंगे तो 'जग जाना' ही उत्तम उपाय है। अन्य सारे उपाय व्यर्थ एवं झूठे ही साबित होंगे।

सारा विश्व परम शक्ति का विलास

ज्ञानेश्वर माउली जी ने (ज्ञानेश्वरी के १६ वें अध्याय में) कहा है कि ''मावळवीत विश्वाभासु! नवल उदेला चंडांशु''(मिटाते विश्वाभास नवल उदित हो चंडांशु।) – यह चित्सूर्य है। आश्चर्यकारी है। इसके उदय होने पर 'नवल' (चमत्कार) हो जाता है। हमेशा सूरज के उदय होने पर अंधेरे में दिखाई न देने वाला जगत् दिखाई देने लगता है। चित्सूर्य के उदय से 'दिखाई देने वाला विश्वाभास' मिट जाता है। माउली ने ऐसा नहीं कहा है कि 'विश्व मिट जाता है।' विश्व का आभास मिट जाता है। जो आभासमय है, स्वप्नवत् है वह विश्व मिट जाता है।

सूरज के उदित होने पर तारे नहीं रहते। चित्सूर्य के उदित होने पर 'ज्ञान-अज्ञान' रूपी तारे मिट जाते हैं। अब 'अज्ञान' मिट जाता है, यह कहना ठीक लगता है परंतु 'ज्ञान' भी मिट जाता है? यह कैसे संभव है?। जो तारे टिमटिमाते हैं वे स्वयंप्रकाशी होते हैं। सूरज के उदित होने पर पर-प्रकाशी तारे दिखाई नहीं पड़ते परंतु स्वयंप्रकाशी तारों का तेज भी फीका पड़ जाता है। वे भी दिखाई नहीं देते। 'अज्ञान' तो चला ही जाता है परंतु 'ज्ञान' भी तो एक वृत्ति ही है। सारा वृत्ति-ज्ञान चला जाता है। ध्यान में लीजिए, 'मैं ब्रह्म हूँ' (अहं ब्रह्मास्मि) में 'अहं' (मैं) 'ब्रह्म' 'अस्मि' (हूँ) याने मैं और ब्रह्म में 'समानता' प्रतीत हो रही है। परंतु 'तदात्मता' अथवा 'एकरूपता' प्राप्त नहीं हुई है। 'समानता' अलग बात है और 'तदात्मता' अलग बात है। इसी कारण यहाँ 'ज्ञान' 'स्वयंप्रकाशी' तारका 'समानता' दिखाने वाली है। उसका भी लय हो जाता है और यह 'वृत्ति' 'चित्सूर्य' बन जाती है। ऐसा होने पर ही ज्ञान को पूर्णता प्राप्त होती है। अपने साथ सारा विश्व ही उस परमशक्ति का विलास है, इस अनुभूति में व्यक्ति स्थिर हो जाता है। यह अनुभूति जीवन का एक अलग ही स्तर है। संतों का जीवन इस स्तर पर होता है।

स्तर बदल जाने पर पूरे जीवन की ही पुनर्रचना हो जाती है।

पशु देह के स्तर पर ही जीते हैं। 'आहार, निद्रा, भय एवं पारिवारिक जीवन' – इनके परे उनकी समझ में कुछ नहीं आता। उनकी जीवन की लीक निश्चित है। अनेक वर्षों, अनेक पीढ़ियों में उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। परंतु मानव का वैसे नहीं होता । उसका मन, उसकी बुद्धि विकसित हो गई। और वैसे-वैसे उसका जीवन

भी बदलता गया। हर पीढ़ी गत पीढ़ी से भिन्न है। उसका आहार भिन्न है, खान-पान की पद्धति भिन्न है। वैसे ही जीने के ढंग एवं स्तर दोनों बदल जाते हैं। घर बदल गए, गाँव बदल गए, कपड़ा-लत्ता बदल गया, शिक्षा बदल गई, भाषा बदल गई। क्या नहीं बदला है? मानवी जीवन कल के जैसा आज नहीं है। जीवन का स्तर बदल जाने पर पूरे जीवन की पुनर्रचना करनी पड़ती है। भौतिक स्तर पर इस बात का अनुभव हम ले ही रहे हैं, आध्यात्मिक स्तर पर भी वैसे ही होता है। आध्यात्मिक स्तर बदल जाने से जीवन की रचना बदल जाती है। सुख-दुःख का स्वरूप बदल जाता है।

एक 'मूलभूत' प्रश्न

आपको एक घटना सुनाता हूँ; जो स्वयं ही सब स्पष्ट करेगी। यह घटना पुणे की है। पुणे में एक शिक्षण-संस्था है। पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एव महाविद्यालयीन शिक्षा एक ही संस्था में पूरी की जा सकती है। इन सभी की संस्था तो एक ही है; परंतु विद्यालयों के स्थान, शिक्षक, प्राध्यापक, कक्षाएँ भिन्न-भिन्न हैं। यह बात तो स्वाभाविक ही है।

एक माध्यमिक शाला के शिक्षक ने परिश्रमपूर्वक पुणे विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) को दर्शन विषय पर शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय की ओर से उस ग्रंथ को मान्यता प्राप्त हुई। विश्वविद्यालय ने उस शिक्षक को 'विद्यावाचस्पति' (डॉक्टरेट) की उपाधि प्रदान की। पाठशाला एवं उस संस्था ने उस शिक्षक का सम्मान-समारोह आयोजित किया। उस सम्मान समारोह में उस संस्था की प्राथमिक पाठशाला के एक शिक्षक ने सभा में उठकर भरी सभा में उनसे प्रश्न किया, ''आपने बड़े परिश्रम उठाए। उनमें आपने पाँच-सात वर्ष बिताए। चार-पाँच सौ ग्रंथ भी आपने पढ़े। जान गए हम। परंतु आजकल मिट्टी का तेल नहीं मिल रहा है। उसके लिए लोगों को कतारों में घंटों खड़े रहना पड़ता है। एक बोतल मिट्टी का तेल पाने के लिए तीन-चार घण्टे कतार में खड़े रहना पड़ता है। क्या आपके इस ज्ञान से गृहस्थ जीवन के लिए अत्यावश्क मिट्टी का तेल मिल सकता है? यदि नहीं; तो आपके इस ज्ञान का लाभ क्या है? आपकी इस उपाधि से हमारी समस्याएँ तो हल होने वाली नहीं हैं।''

उसका कहना ठीक ही है। प्राथमिक शाला के शिक्षक का यह 'प्राथमिक' प्रश्न है। उसकी दृष्टि में 'विद्या-वाचस्पति' उपाधि प्राप्त करना बेकार है। वह ज्ञान निरुपयोगी है। इसका कारण यही है कि उसकी समस्या अलग स्तर की है।

ऐसा ही होता है। ज्ञान का स्तर बदल जाने पर पूरे जीवन का स्वरूप बदल जाता है। सुख-दुःख का स्वरूप बदल जाता है। तुकोबाराय कहते हैं, ''बुडती हे जन न देखवे डोळां'' (डूबते ये जन। देखा नहीं जाता) कुछ भी बोलते हैं। हम कहाँ डूबते हैं? कोई आधुनिक महाविद्यालयीन युवक कहेगा, ''तुकोबा, आपको ऐसा क्यों लगता है कि हम डूब रहे हैं? तुकोबा, आपने कभी 'कोल्ड कॉफी' पी है? 'मस्तानी आईसक्रीम' खाई है? नहीं न? क्या विठ्ठल विठ्ठल करते बैठते हैं? और तिसपर कहते हैं कि 'आनंदाच्या डोही आनंद तरंग' (आनंद के दह में आनंद तरंग)-उसमें भला क्या आनंद हो सकता है? एक बार आईसक्रीम चाखिए और फिर बताइए।।

यह विचार उनके स्तर के लिए स्वाभाविक है। तुकोबा के आनंद का स्तर भिन्न है। उस स्तर के आनंद का अंदाजा सामान्य लोगों को हो ही नहीं सकता। तुकोबा अपने स्तर से आईसक्रीम खाने वाले लोगों को देखकर कहेंगे ही, ''बुडती हे जन न देखवे डोलां!'' दोनों स्तर भिन्न-भिन्न ही हैं। स्तर बदलते ही संपूर्ण जीवन की अंतर्बाह्य रचना ही बदल जाती है। एक को दूसरे की स्थिति का अनुमान ही नहीं हो सकता। युवक कहेगा, ''विठ्ठल विठ्ठल करते क्या बैठे हैं? जीवन के सुखोपभोग लो। फिर से यह जीवन नहीं मिलने का।'' तुकोबा कहेंगे, ''अरे! इन इंद्रियों के सुखों की बात क्यों करते हो? विठ्ठल

का नाम स्मरण करो। क्यों अपनी जिंदगी बरबाद कर रहे हो?'' यह ऐसा ही होता है। जीवन का स्तर बदलने पर जीवन दर्शन ही बदल जाता है। इसी कारण यदि कहा जाए कि 'जीवन और यह सारी सृष्टि मनो-निर्मित है', तो उसमें गलत क्या है? एक को जैसे दिखाई देता है, जैसा एक अनुभव करता है, वैसा दूसरा अनुभव नहीं करता, वैसा नहीं देखता।

जीवन का स्तर बदलने पर जीवन दर्शन ही बदल जाता है। इसी कारण यदि कहा जाए कि 'जीवन और यह सारी सृष्टि मनो-निर्मित है', तो उसमें गलत क्या है? एक को जैसे दिखाई देता है, जैसा एक अनुभव करता है, वैसा दूसरा अनुभव नहीं करता, वैसा नहीं देखता।

काल-संकल्पना सापेक्ष है

'दूध अच्छा है या बुरा' इस प्रश्न का उत्तर देना हो; तो चतुर आदमी पहले प्रतिप्रश्न करेगा – किसके लिए? ज्ञानेश्वरजी कहते हैं,''अगा गोक्षीर जरी जाहले! पथ्यासी नाहीं घेतले, तरी विष हो सूदले। नवज्वरी देता। नवज्वर में दूध भी विष के समान नुकसान करता है। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के संबंध में यह सच है।'यह पदार्थ ऐसा है!' इस पदार्थ का निश्चित प्रतिपादन किसी भी पदार्थ के बारे में नहीं किया जा सकता। जो बात वस्तु के संबंध में सच है वह काल के संबंध में भी कही जा सकती है। काल भी मनोनिर्मित ही है। निरपेक्ष काल अस्तित्व में ही नहीं है। जरा सोचिए। हम पृथ्वी पर रहते हैं। पृथ्वी को स्वांग-परिभ्रमण के लिए जो भी समय लगता है उसे हम 'दिन' कहते हैं। यह समय २४ घण्टों का है। ऐसा हमारा कथन होता है। पृथ्वी की अपेक्षा गुरु या शनि बड़े ग्रह हैं। उनके स्वांग-परिभ्रमण के लिए इससे अधिक काल लगता है। याने गुरु पर या शनि-पर दिन २४ घण्टों का नहीं होता।। वह बहुत लम्बी अवधि का होता है। जो बात दिन की; वही बात वर्ष की। पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने में एक वर्ष लगता है। उसकी अपनी कक्षा निश्चित होती है। परंतु गुरु, मंगल, शनि की कक्षाएँ पृथ्वी की कक्षा से अधिक बड़ी है और सूर्य की परिक्रमा करने के लिए उन्हें दिन भी अधिक लगते हैं – याने उनके वर्ष हमारे वर्ष से लम्बे होते हैं। इसके माने हुए कि पृथ्वी पर होने वाला काल और गुरु, मंगल, शनि आदि पर होने वाला काल समान नहीं है। दूसरे शब्दों में, ''पृथ्वी पर रहने वाले आदमी ने पृथ्वी पर अपने जीवन की सहूलियत की दृष्टि से काल की संकल्पना की है। वह निरपेक्ष नहीं है।'' अन्य ग्रहों को छोड़िए, एक पृथ्वी पर भी सर्वत्र काल-संकल्पना एक जैसी नहीं होती। भूगोल में 'अंतर्राष्ट्रीय' वार-रेखा तो पढ़ी ही है। यह रेखा भी काल्पनिक ही है। एक काल्पनिक रेखा पश्चिम से आते- आते अतिपूर्व दिशा में आती है और वही रेखा अतिपूर्व से आते-आते अतिपश्चिम पहुँचती है। इसी कारण इस रेखा को पार करते समय या तो वही दिन फिर से पकड़ना पड़ता है या एक दिन छोड़ कर अगला दिन पकड़ना पड़ता है।याने 'सोमवार के बाद फिर से सोमवार ही आयेगा' अथवा 'सोमवार के बाद बुधवार आएगा।' अब निरपेक्षकाल कहाँ रहा? यह काल तो मानव-निर्मित है।

इतना ही नहीं तो एक विशिष्ट क्षण भूतकाल भी हो सकता है और भविष्यत् भी हो सकता है। नहीं ध्यान में आता न? ठीक है एक उदाहरण लेकर देखते हैं – जरा सोचिए। हम समुद्र-किनारे बैठे हैं। समुद्र के तट पर एक ऊँचा नारियल का पेड़ है। एक आदमी नारियल के पेड़ की सबसे अधिक ऊँचाई पर है, दूसरा बीच में ही है और तीसरा पेड़ के तले खड़ा है। सिरे पर बैठा आदमी कहता है, ''अरे एक जहाजरानी आई है।'' (आसन्न भूतकाल का प्रयोग करता है।) बीच का कहता है, ''नहीं, अभी अभी आ रही हैं।'' (तात्कालिक वर्तमान काल का प्रयोग करता है।) पेड़ के तले खड़ा आदमी

शेष पृष्ठ १३ पर ....

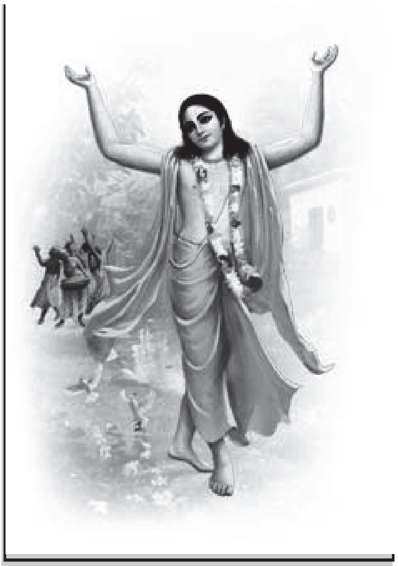

ऐसी हो प्रभु दर्शन की प्यास!

एक उड़िया स्त्री जब दर्शन करने में असमर्थ रही, तो झट गरुड़-स्तंभ पर चढ़ गई और एक पैर महाप्रभु के कंधे पर रखकर प्रभु के विग्रह का दर्शन करने लगी।

महापुरुष लोगों के जीवन स्तर अथवा जाति से प्रभावित नहीं होते। वे प्रभावित होते हैं व्यक्ति-विशेष की प्रभु के प्रति आकुलता को देख कर। क्योंकि आतुर भक्त से ही प्रभु प्रेम करते हैं। एक बार एक मन्दिर में आरती का पुनीत समय था। शंख और घंटे की आवाज से भगवान जगन्नाथ का मन्दिर गूंज उठा। महाप्रभु चैतन्य गरुड़-स्तंभ के पास खड़े भगवान की आरती को बड़ी तन्मयता से गा रहे थे। मंदिर में भक्तों की भीड़ बढ़ती जा रही थी।

बाद में आने वालों को मूर्ति दर्शन नहीं हो पा रहे थे। एक उड़िया स्त्री जब दर्शन करने में असमर्थ रही, तो झट गरुड़-स्तंभ पर चढ़ गई और एक पैर महाप्रभु के कंधे पर रखकर प्रभु के विग्रह का दर्शन करने लगी।

महाप्रभु ने तो इस बात को सहन कर लिया; परंतु उनका शिष्य गोविंद भला क्यों सहन करता? वह उस स्त्री को डाँटने लगा, पर महाप्रभु ने ऐसा करने से मना किया, ''क्यों बाधक बनते हो? भगवान के दर्शन कर लेने दो। इस माता को दर्शन की जो प्यास भगवान ने दी है, यदि मुझे भी प्राप्त होती, तो मैं धन्य हो जाता। इसकी तन्मयता तो देखो कि इसे यह भी ध्यान नहीं रहा कि पैर किसके कंधे पर है।''

महाप्रभु का इतना कहना था कि वह धम्म से नीचे आ गिरी और उनके चरणों में गिरकर, क्षमा माँगने लगी। महाप्रभु ने अपने चरण हटाते हुए कहा, ''अरे! तुम यह क्या कर रही हो! मुझे तुम्हारे चरणों की वंदना करनी चाहिए; ताकि तुम जैसा भक्तिभाव मैं भी प्राप्त कर सकूँ।''

महाप्रभु चैतन्य के जीवन में आध्यात्मिकता का वास्तविक स्वरूप-लोकसेवा का लक्षण पूरी तरह प्रकट हुआ था। उन्होंने अपना सारा जीवन दुःखी-दरिद्रों तथा गिरे हुओं को ऊँचा उठाने में लगाया।

उक्त वृद्धा को उन्होंने पैरों में से उठाकर खड़ा किया और स्वयं पैर छूने लगे। उन्हें पैर छूते देखकर आस-पास के लोगों ने, जो उन्हें पहचान गए थे, महाप्रभु से कहा, ''यह क्या करते हो महाराज! इस नीच बुढ़िया के पैर छू रहे हो?''

''क्या हुआ भाइयों?'' चैतन्य बोले, ''अपने से अच्छे और श्रेष्ठ लोगों को आदर-सम्मान देने में कोई बुराई थोड़े ही है। वैसे भी यह वृद्धा मुझसे आयु में बड़ी है। मैं इनके पैर छू रहा हूँ तो कौन-सा पाप कर रहा हूँ? यह तो लक्ष्मी का ही अवतार है।''

भक्तिभाव से गद्‌गद वाणी को सुनकर आस-पास एकत्र लोग धन्य-धन्य कह उठे।

सामयिक चिंतन

सनातन धर्म और श्री अरविन्द!

विगत दिनों 'महायोगी श्री अरविंद विचार मंच' द्वारा आयोजित एक व्याख्यानमाला में प.पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज द्वारा 'सनातन धर्म और श्री अरविंद' विषय पर प्रवचन दिये गये। व्याख्यान का सार संक्षेप डॉ. अंशुमती जी अ. दुनाखे द्वारा यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। – सं.

विगत दिनों प.पू. महाराजश्री ने 'सनातन धर्म और श्री अरविंद' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि सामान्यतः हम 'धर्म' शब्द का प्रयोग बहुत ही संकुचित अर्थ में करते हैं, जो उचित नहीं है। आपने कहा, 'धर्म का अर्थ है सदाचार, सन्मूल्यों का स्वीकार एवं तद्नुसार आचरण। इसे किसी वस्तु के स्वभाव, लक्षण एवं विशेषता के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है, जैसे अग्नि का धर्म है दाहकता, वायु का धर्म है बहना आदि।' आपने आगे कहा कि धर्म शब्द को सम्प्रदाय के रूढ़ अर्थ में प्रयोग भी हमारी अल्पज्ञता का परिचायक है। जो वर्तमान का चलन है।

इसके विपरीत श्री अरविंद हिन्दू धर्म के प्रति कैसी उदात्त अवधारणा रखते थे; यह हमें उनके प्रसिद्ध उमरापार के भाषण में देखने को मिलता है। वे भाषण में कहते हैं–श्री वासुदेव ने मुझसे कहा है कि हिन्दु धर्म विश्व का उत्कृष्ट धर्म है।

It is this Hindu Religion that I have perfected and have developed through the Rishis, Saints and Avatars, and now it is going to do my work among the nations," हिंदु धर्म विश्व का अखिल मानव-जाति का धर्म है। सनातन धर्म का अर्थ विशद करते हुए उन्होंने कहा था, If a religion is not universal, it can not be eternal A narrow religion, a sectarian religion, an exclusive religion can live only for limited time and limited purpose. Thus Hinduism is the one religion that can triumph over materialism by including the discoveries of science and the speculations of philosophy.

श्री अरविंद की धारणा के पांच आधार :–

पू. महाराज श्री ने आगे कहा कि श्री अरविंद के मन में हिन्दु धर्म की इस उदात्त संकल्पना के पाँच मुख्य आधार थे। वेद, श्रीमद्भगवद्गीता, योग, भारतमाता एवं विश्वात्मकता।

इस संदर्भ में आप विश्वास कीजिए कि आप जैसा बोएँगे वैसा पाएँगे; क्योंकि दुनिया में नियति का या कर्म का कानून बहुत ही कठोर होता है। इस संसार का सबसे महत्त्वपूर्ण और पहला नियम है कि मनुष्य कहीं भी, कभी भी; जो अच्छा या बुरा कर्म करता है, उसका परिणाम उसे कहीं न कहीं, कभी न कभी, किसी भी समय भुगतना ही पड़ता है।

हमारे वेदों के विचारों और संकल्पनाओं का दायरा बहुत विस्तृत है। हमारे यहाँ 'विश्व' एक ही इकाई माना गया है। उपनिषद में उसे 'पांक्त' कहा गया है। हर बात एक दूसरे से जुड़ी हुई होती है। एकदम अलग-अलग कोई भी वस्तु बात हो ही नहीं सकती। केवल सारी मानव-जाति ही नहीं; अपितु पशु, पक्षी, नदी, नाले, कीट, पतंग सभी एक दूसरे से जुड़े हैं। यदि हर व्यक्ति दूसरे का विचार करके जिए तो सारे सुखी हो सकते हैं। केवल 'मैं' का विचार अपने लिए तथा विश्व के लिए हानिकारक है।

> अत: इन पाँच अधिष्ठानों पर आधारित यह हिंदु धर्म मानवता का धर्म है। वह लोगों को 'आर्य' बनाता है। आर्य याने सुसंस्कृत, सदाचारी, विश्वकल्याण का सतत चिंतन करनेवाला यह सनातन धर्म है। सनातन याने आदि धर्म जिसका कोई संस्थापक नहीं, जो कभी पुराना नहीं होगा। यह आत्मिक विकास पर, नैतिकता पर, परस्पर सहयोग पर बल देने वाला धर्म है।

वेदों में विज्ञान भी भरा हुआ है। वे लोग गुरुत्वाकर्षण जानते थे। (ऋग्वेद के दसवें मण्डल का सूर्य - सूक्त देखा जा सकता है।) सूर्यग्रहण के बारे में वे वैज्ञानिक जानकारी रखते थे। अत्रि ऋषि ने उसके बारे में गणित का तथा ग्रहण कालीन सूर्य में होने वाले बदलों का भी उल्लेख किया है। वेदों में जो संकल्पनाएँ हैं, उनके आधार पर आजकल का विज्ञान है। पोस्टक्वान्टम वैज्ञानिक खुले आम बताते हैं।

वेदकालीन संस्कृत भाषा हमारे लिए कठिन हो सकती है। वेदराशि विशाल है; किन्तु संक्षेप में महत्त्वपूर्ण तथ्य बताने वाली **श्रीमद्भगवद्गीता** हमारे लिए भगवान श्रीकृष्ण ने उपलब्ध कराई है। आज २१ वीं सदी में भी हमारे आचार-विचारों पर श्रीमद्भगवद्गीता का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

तीसरा आधार है **योग**। योग याने भगवान से जुड़ना। वैसे पातंजल योग, हठयोग, राजयोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग आदि अनेक योग हैं। सब में एक ही समान सूत्र हैं, **मूल स्रोत से जुड़े रहना।** उस मूल स्रोत को कोई क्या नाम देता है, वह माइने नहीं रखता। कोई उसे **ब्रह्म** कहता है, कोई **आदिशक्ति** कहता है, कोई **भगवान** और कोई कुछ। अपना सारा जीवन उससे जुड़े रहकर विकसित करना याने योग है।

चौथा आधार है **भारतमाता**। यह कोई भूभाग विशेष का टुकड़ा नहीं है। यह एक दिव्य शक्ति है- शांत, आलोकमयी, वत्सल, सब का उत्थान करनेवाली सब को अपने आँचल की छाया में लेनेवाली। ब्रह्मानंद स्वामी की खोज में श्री. अरविंद जब नर्मदा के तटपर घूम रहे थे तब एक कालीमाता की मूर्ति में उन्हें भारतमाता के दर्शन हुए थे। अपनी 'भक्ति मंदिर' नामक पुस्तिका में उन्होंने इसका सुंदर वर्णन किया है। भारतमाता शक्ति-संपन्न है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक शक्ति से परिपूर्ण है। यहाँ ऐहिकता का विरोध नहीं है; आधुनिकता का विरोध नहीं है, सौंदर्य का विरोध नहीं है, सर्वत्र एक आत्मिक शक्ति का सुंदर विकास है।

पाँचवी विशेषता है **'विश्वात्मकता'**। भारतीय विचारधारा हमेशा विश्वात्मक विचार करनेवाली रही है। श्री अरविंद ने भारत में आने पर एक स्थान पर लिखा था कि वे भारत की मुक्ति, भारत का उत्थान केवल भारत के लिए नहीं चाह रहे हैं; अपितु विश्व के उत्थान के लिए चाह रहे हैं। भारत का उत्थान होगा; तो विश्व का उत्थान होगा। इसका कारण यह है कि भारत नेहमेशा पूरे विश्व का ही विचार किया है।

इस संदर्भ में मुझे श्री

पांडुरंगशास्त्री आठवले जी के जीवन का एक प्रसंग याद आता है। उन्हें अरब प्रदेशों में गीता पर प्रवचन करने का निमंत्रण मिला था। पूज्य चिन्मयानंदजी से लेकर सभी ने बताया था कि वहाँ किसी को हिंदु धर्म पर बोलने नहीं दिया जाता; परंतु शास्त्रीजी वहाँ गये। वहाँ के अमीरसे मिलकर उनसे अनुमति लेनी थी। उन्हें पाँच मिनट दिए गए थे। उन्होंने 'गीता मानवजाति के लिए अत्यावश्यक ग्रंथ किस प्रकार है', यह उन्हें समझाया। पाँच मिनट बढ़ते-बढ़ते घण्टा भी हो गया, फिर भी अमीर का दिल नहीं भरा था। उन्होंने इतने महत्त्वपूर्ण और उपयोगी विषय पर सार्वजनिक प्रवचन देने की सहर्ष अनुमति दी। यह गीता का कमाल है।

अत: इन पाँच अधिष्ठानों पर आधारित यह हिंदु धर्म मानवता का धर्म है। वह लोगों को 'आर्य' बनाता है। आर्य याने सुसंस्कृत, सदाचारी, विश्वकल्याण का सतत चिंतन करनेवाला यह सनातन धर्म है। सनातन याने आदि धर्म जिसका कोई संस्थापक नहीं, जो कभी पुराना नहीं होगा। यह आत्मिक विकास पर, नैतिकता पर, परस्पर सहयोग पर बल देने वाला धर्म है।

यह सब उन्होंने भावना के आधार पर नहीं कहा था, वेदों, उपनिषदों, श्रीमद्भगवद्गीता के गहन अध्ययन चिंतन के आधार पर कहा था। उनका दृढ़ विश्वास था कि यही धर्म विश्व को शांति, सहयोग, समृद्धि एवं आत्मविकास की ओर ले जाएगा।

मानव अपनी अपूर्णता से उपर उठे; पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाए।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं
पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय
पूर्णमेवावशिष्यते।।

– डॉ. अंशुमती अ. दुनाखे

पृष्ठ ९ का शेष .....

मन और जगत्

कहता है, ''अरे अभी आने वाली है।'' (भविष्य काल का प्रयोग करता है।) याने एक विशिष्ट क्षण के लिए तीनों कालों का प्रयोग होता है। तीनों ठीक ही बोल रहे हैं; क्योंकि 'काल मनो-निर्मित' ही होता है। और एक मजेदार उदाहरण देखिए। एक बाग में एक बेंच पर दो बूढ़े बैठे हैं। थोड़ी दूरी पर, घूमने आए एक नव-दंपति बैठे हैं। एक बूढ़ा दूसरे बूढ़े से कहता है, ''घड़ी आगे खिसकती ही नहीं है। समय आगे ही नहीं बढ़ता। जी बहुत ऊब जाता है।'' वहीं थोड़ी दूर बैठे पति-पत्नी कहते हैं, ''अरे एक घण्टा बीत गया। समय कैसे दौड़ता है पता ही नहीं चलता।'' अब देखिए एक के लिए जो समय रेंगता है वहीं दूसरे के लिए दौड़ता है। किसी का समय कटे नहीं कटता तो किसी का चौकड़ी लगाता है। वास्तव में देखा जाए तो समय न धीमा चलता है और न वेग से, वह तो अपनी निश्चित गति से ही चलता है। परंतु प्रत्येक के लिए समय अपना अलग होता है। सच है न? इसके माने हुए कि काल मनो-निर्मित है। अब मान लीजिए कि ऐसा संभव हो गया कि हम सूरज पर ही रहने लगें तो 'दिन उदित हुआ', 'दिन का अस्त हुआ।' 'रात हो गई' 'एक वर्ष पूरा हुआ' आदि सारे वाक्य अर्थ शून्य हो जाएँगे। अखंड निरंतर प्रकाश ही होगा तो 'उदय' और 'अस्त' कैसा? इतना ही नहीं तो 'रात ही न होने के कारण' 'दिन है' यह प्रयोग भी गलत ही होगा। इसी कारण महर्षि कहते हैं कि स्थल-काल मनोनिर्मित है। यह बात हमें माननी पड़ेगी।

– क्रमशः

राम नवमी

कैसे मनाएं राम जन्मोत्सव?

> इस उत्सव का प्रधान उद्देश्य होना चाहिये श्रीराम को प्रसन्न करना और श्रीराम के आदर्श गुणों का अपने में विकास कर श्रीराम कृपा प्राप्त करने का अधिकारी बनना। अतएव विशेष ध्यान श्रीराम के आदर्श चरित्र के अनुकरण पर ही रखना चाहिये।

श्रीरामनवमी सारे जगत् के लिये सौभाग्य का दिन है; क्योंकि अखिल विश्वपति सच्चिदानन्दघन श्रीभगवान् इसी दिन दुर्दान्त रावण के अत्याचार से पीड़ित पृथ्वी को सुखी करने और सनातन धर्म की मर्यादा की स्थापना करने के लिये मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के रूप में प्रकट हुए थे। श्रीराम केवल हिन्दुओं के ही 'राम' नहीं हैं, वे अखिल विश्व के हैं,सबमें हैं, सबके साथ सदा संयुक्त हैं और सर्वमय हैं।

हमें श्रीराम-जन्म का पुण्योत्सव मनाना चाहिये। इस उत्सव का प्रधान उद्देश्य होना चाहिये श्रीराम को प्रसन्न करना और श्रीराम के आदर्श गुणों का अपने में विकास कर श्रीराम कृपा प्राप्त करने का अधिकारीबनना। अतएव विशेष ध्यान श्रीराम के आदर्श चरित्र के अनुकरण पर ही रखना चाहिये। श्रीराम जन्मोत्सव की विधि इस प्रकार की जा सकती है-

१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल नवमी तक नौ दिन उत्सव मनाया जाये।
२) प्रत्येक मनुष्य (स्त्री, पुरुष, बालक) प्रतिदिन अपनी रुचि के अनुसार श्रीराम के दो अक्षर, मन्त्र का नियम पूर्वक जप करें। पहले दिन नियम ले ले, उसी के अनुसार नौ दिन तक करते रहना चाहिये। कम से कम १०८ मन्त्र का जप तो रोज होना चाहिये। उत्साह और समय मिले तो नौ दिनों में नौ लाख नाम-जप कर सकते हैं।
३) रोज सुबह या शाम को कुछ समय तक नियमित रूप से श्रीराम नाम का कीर्तन हो।
४) श्रीरामायण का नौ दिनों में पूरा पाठ किया जाय। वाल्मीकि, अध्यात्म या श्रीगोसाईजीकृत श्रीरामचरितमानस; इनमें से अपनी रुचि के अनुसार किसी भी रामायण का पाठ कर सकते हैं। जो ऐसा न कर सकें; वे कुछ समय तक रोज रामायण पढ़ें या सुनें।
५) माता-पिता के चरणों में रोज प्रातः प्रणाम करें।
६) यथासाध्य खूब सावधानी से सत्यभाषण करें (सच बोलें)
७) घर में माता, पिता, भाई, भौजाई, स्वामी, स्त्री, नौकर, मालिक-

शेष पृष्ठ ३१ पर.....

बात श्रद्धा की

निरक्षर श्रद्धालु भक्त पर ग्रंथ कृपानुभूति

योग दर्शन में आया है **'स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः।'**

अर्थात् स्वाध्याय से इष्ट देवता का साक्षात्कार होता है। यहाँ स्वाध्याय का अर्थ है – मन्त्र-जप, लेकिन एक अच्छे सन्त ने अपने सहज ढंग से स्वाध्याय की जो व्याख्या की, वह भी भूलने योग्य नहीं है। वे कहते थे-'स्वाध्याय का अर्थ है 'स्व' अपना + अध्याय अर्थात् वह ग्रन्थ या मन्त्र, जिसे तुमने अपनाया है, वह तुम्हारे अपने जीवन का एक अंग-अध्याय हो जाय।'

पाठ करने से एक विशेष प्रकार की शक्ति प्राप्त होती है। जैसे स्नान करने से शरीर स्वच्छ होता है और स्फूर्ति आती है, वैसे ही नित्यपाठ आन्तरिक स्नान है। इससे अन्तःकरण की शुद्धि होती है और मानसिक प्रेरणा मिलती है साधन के लिये।

आप गीता, भागवत या श्रीरामचरितमानस का कोई श्लोक अथवा चौपाई कंठस्थ कर लें, जो आपको बहुत साधारण लगे और मन-ही-मन उसे बार-बार दुहराते रहें। धैर्यपूर्वक दो-चार दिन उसको दुहरायें। ऐसा करने से अचानक किसी समय आपको उसका ऐसा अर्थ सूझेगा, जो स्वयं आपको चकित कर देगा। यह उसके उस अर्थ पर पड़ा आवरण उसके बार-बार पाठ करने से दूर हुआ। इसी प्रकार अन्तःकरण में ही स्थित परमात्मतत्त्व पर जो आवरण है, वह पाठ करते रहने से दूर होता है या शिथिल पड़ता है।

पाठ करना तो फिर भी बड़ी बात है, पाठ करने का संकल्प और उसकी चेष्टा भी चमत्कार उत्पन्न करती है, यह मैंने देखा है।

वाराणसी जिले में एक गाँव है महुअर। जब देश का स्वाधीनता आन्दोलन चल रहा था, तब उस गाँव के एक क्षत्रिय युवक सत्याग्रह आन्दोलन में मेरे साथी थे। नाम तो उनका जयनाथसिंह था; किंतु सब उन्हें जैनूसिंह कहते थे। उनके सगे भाई देवनाथसिंह, जिन्हें देऊसिंह कहा जाता था, मुझसे सम्भवतः सन् १९३८ ई. में मिले। वे सत्याग्रह आन्दोलन

आप गीता, भागवत या श्रीरामचरितमानस का कोई श्लोक अथवा चौपाई कंठस्थ कर लें, जो आपको बहुत साधारण लगे और मन-ही-मन उसे बार-बार दुहराते रहें। धैर्यपूर्वक दो-चार दिन उसको दुहरायें। ऐसा करने से अचानक किसी समय आपको उसका ऐसा अर्थ सूझेगा, जो स्वयं आपको चकित कर देगा। यह उसके उस अर्थ पर पड़ा आवरण उसके बार-बार पाठ करने से दूर हुआ। इसी प्रकार अंतःकरण में ही स्थित परमात्मतत्त्व पर जो आवरण है, वह पाठ करते रहने से दूर होता है या शिथिल पड़ता है।

मैं उनको लेकर एकान्त में गया। उन्होंने अपनी पुस्तक खोली, जो वह साथ लाये थे। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब मैंने देखा कि वे जिन पंक्तियों पर अँगुली फेरते हैं, उनका शुद्ध उच्चारण उनके मुख से होता है।

श्रीरामचरितमानस-जैसे ग्रन्थ मन्त्रात्मक हैं और चेतन हैं। इनका श्रद्धापूर्वक आश्रय लिया जाय तो पाठ करने वाले पर ये कृपा करते हैं।'

में तो सम्मिलित नहीं हुए थे, किंतु मुझे जानते थे।

मैं सन् १९३६ ई. से ही वाराणसी से दूर हो गया था और सन् १९३७ ई. से मेरठ से निकलने वाले मासिक-पत्र 'संकीर्तन' का संपादन करने लगा था। उस समय मैं मेरठ से अपनी जन्मभूमि के क्षेत्र में बहुत थोड़े दिनों को आया था।

एक दिन देवनाथसिंह आये और मेरे समीप कुछ समय तक बैठे रहे, फिर एकान्त मिलने पर बोले- 'मेरी इच्छा गीता-पाठ करने की होती है। अब इस आयु में गाँव के किसी व्यक्ति से अक्षर पढ़ने बैठने में लज्जा आती है। कोई उपाय बतलाइये।'

वे जमींदार थे। उन दिनों सम्पन्न ग्रामीण किसान-जमींदार अपने या अपने पुत्रों के लिये पढ़ना-पढ़ाना अनावश्यक मानते थे। कह देते थे-'लड़के को पढ़ाकर क्या करना है। उसे कोई नौकरी करनी है क्या?'

मैं जानता था कि जयनाथसिंह, जो मेरे कांग्रेस-आन्दोलन के साथी थे, उन्होंने भी कांग्रेस-आन्दोलन में आने के पश्चात् अक्षरज्ञान सीखा था और धीरे-धीरे हिन्दी की पुस्तकें पढ़ने लगे थे। उनके भाई देवनाथसिंह भी निरक्षर ही थे।

किसी भी आयु में पढ़ने लगना कोई लज्जा की बात नहीं है, यह भले ही सत्य है, किंतु ३०-३५ वर्ष के ग्रामीण युवक को यह तथ्य समझा देना मुझे सरल नहीं लगा और जिसे वर्णमाला की पहचान भी न हो, उसे गीता-पाठ करने की भला कौन-सी युक्ति मैं बतला देता।

यह तो अब मैं जानता हूँ कि बाबा नन्दजीने भी अपने लाला को पढ़ाया नहीं, छोटेपन में ही गोचारण में लगा दिया, किंतु यह नन्हा अनपढ़ गोपाल, जिसे चाहे उसे सहज महापण्डित बना देता है।

उस समय मैंने देऊ (देवनाथसिंह)- को समझा दिया- गीता भगवान् की वाणी होने से भगवान् का स्वरूप है, अतः गीता का स्पर्श भी गीता-पाठ जैसा ही है। आप प्रतिदिन गीता की पुस्तक को प्रणाम कर लिया करें और पंक्तियों पर अँगुली फिरा लिया करें।

उन्होंने मेरी बात पर विश्वास कर लिया। सन्तुष्ट होकर चले गये। पीछे कहीं से गीता प्रेस (गोरखपुर)- से छपी गीता के मूल श्लोकों की बड़े अक्षरों की पुस्तक खरीद लाये और नियम से प्रतिदिन प्रारम्भ से अन्त तक उसकी पंक्तियों पर अँगुली फिराने लगे।

अब मुझे स्मरण नहीं है कि वर्ष, डेढ़ वर्ष या दो वर्ष में मैं फिर मेरठ से उधर गया, किंतु मेरे उधर जाने का किसी से पता लगा तो देवनाथसिंह फिर मेरे पास आये। उन्होंने बड़ी नम्रता से मुझसे कहा- 'मैं गीता की पंक्तियों पर अँगुली फिराता हूँ; तो मेरे मुख से कुछ निकलता है। मैं क्या बोलने लगता हूँ, मुझे पता नहीं है। आप थोड़ी देर एकान्त में चलकर इसे देख लीजिये।'

मैं उनको लेकर एकान्त में गया। उन्होंने अपनी पुस्तक खोली, जो वह साथ लाये थे। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब मैंने देखा कि वे जिन पंक्तियों पर अँगुली फेरते हैं, उनका शुद्ध उच्चारण उनके मुख से होता है।

मैंने उन्हें गीता की दूसरी पुस्तक तो नहीं दी। मुझे आवश्यकता नहीं लगी और न वहाँ मेरे पास दूसरी मोटे या मझोले टाइप की कोई प्रति थी, किंतु उस प्रति को बीच-बीच में खोलकर कई स्थानों पर उनसे अँगुली फिरवाकर देख लिया कि वे जिस पंक्ति पर अँगुली फिराते थे, उसका उनके मुख से शुद्ध उच्चारण होता था।

यह तथ्य उन्हें मैंने बतलाया तो वे भाव-विह्वल हो गये, उनकी आँखों से अश्रु बहने लगे। गद्गद् स्वर में बोले- 'मुझ-जैसे साधारण व्यक्ति पर भगवान् की इतनी कृपा!'

इसके बाद वे मुझे मिले प्रयाग-झूसीमें और हरिद्वार में। तब थे तो गृहस्थ-वेश में ही, किंतु पैदल अकेले पूरे भारत की तीर्थयात्रा कर रहे थे। तीन बार उन्होंने लगातार यह पैदल तीर्थयात्रा की और चौथी बार ऐसी ही यात्रा करते द्वारका पहुँचे तो श्रीद्वारकाधीश के दर्शन करते समय ही मन्दिर में उनका शरीर छूट गया।

यह घटना इतने विस्तार से देने का कारण यह है कि मैं इसमें बहुत-कुछ प्रत्यक्ष साक्षी रहा हूँ। सुनी-सुनायी बात नहीं है और पाठ तथा कन्हाई की कृपा का अच्छा उदाहरण है।

शेष पृष्ठ १९ पर.....

ईर्ष्यालु का कोई पड़ोसी और कायर का कोई मित्र नहीं होता। – पूज्यपाद

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का बहुप्रतीक्षित प्रकल्प
वेदश्री तपोवन का शिलान्यास सम्पन्न

वेद हमारे धर्मका मूलाधार एवं राष्ट्र की अमूल्य निधि है। आधुनिक वातावरण में उसकी घोर उपेक्षा होने के कारण ई. स. १९९० में वेदसेवा हेतु महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की स्थापना हुई। अब तक प्रतिष्ठान वेदविद्यालयों की स्थापना कर शब्दरक्षण अर्थात वेद मंत्रों की मूल उच्चारण-पद्धति के संरक्षण-संवर्धन में जुटा रहा। फलस्वरूप अब तक संपूर्ण वेदों को कण्ठस्थ करने वाले चार सौ से अधिक वेदपाठी निर्माण हो गये हैं। उनमें से अनेक वेदाध्यापक बन गये। लगभग ४७० छात्र इस समय वेदाध्ययन कर रहे हैं। यह क्रम चलता रहेगा। यह वेद सेवा का प्रथम चरण पूर्ण हुआ है।

वेदरक्षण का यह कार्य तभी सफल होगा जब व्याकरणादि छः वेदांग एवं आयुर्वेद जैसे उपवेदों की सहायता से वेदार्थ अर्थात् वेदों में छिपे हुए सर्वजनोपयोगी सिद्धांतों को अनुसंधान पूर्वक खोजकर वेदांत पर आधारित आदर्श भारतीय जीवनशैली को वास्तविक में प्रस्तुत किया जाए। इसी हेतु प्रतिष्ठान ने संकल्प किया है संत ज्ञानेश्वर महाराज की समाधिस्थली आलंदी के समीप १४ एकड़ भूमिपर, पुणे से केवल २० कि.मी. की दूरीपर **'वेदश्री तपोवन' के निर्माण कार्य का आरंभ मार्गशीर्ष शु. एकादशी तदनुसार दि. २१ दिसंबर २०१५ गीता जयंती के पावन पर्व पर कार्य का विधिवत् आरंभ हुआ।** इस कार्य को संपन्न करवाने में श्री. गिरधरजी काले, श्री. आलोकजी अग्रवाल, श्री. संजयजी तापड़िया एवं हॉलंण्ड के राजा लुईस के अनुयायियों के साथ-साथ वे.मू. श्री. महेशजी नंदे, वे.मू. श्री. भगवान गुरुजी, आलंदी विद्यालय के व्यवस्थापक श्री. चंद्रकांतजी इंदलकर एवं वैदिक छात्रों का बहुत बडा योगदान रहा। अब इंतजार की घड़ी समाप्त हुई; और अब हमें जल्द ही पू. गुरुदेव के स्वप्नों का 'वेदश्री तपोवन' का भव्य स्वरूप दृष्टिगोचर होगा।

इसमें वेदांग, वेदार्थ तथा वेदांत की शिक्षा होगी; जो वैदिक प्रचारकों के निर्माणार्थ अनिवार्य है। वेदपाठी छात्रों की उच्च शिक्षा का यह वैश्विक केंद्र होगा। समाजके कल्याणार्थ वैदिक विचारों का उपयोग करने हेतु अनुसंधान करना वेदश्री तपोवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग रहेगा। समाज के सभी वर्गों के छात्र एवं छात्राएँ इसमें अध्ययन एवं अनुसंधान कर सकेंगे।

इसी के साथ साधक यहाँ आकर रह सकें, ध्यान-योग शिविर में तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सम्मिलित हो सकें; ऐसी भी व्यवस्था होगी।

वेदश्री तपोवन एक दृष्टिक्षेप में

• १४ एकड़ की प्राकृतिक पार्श्वभूमि, इंद्रायणी नदीतट के सान्निध्य में। • विशाल वेदांग, वेदार्थ एवं वेदान्त विद्यापीठ। • आधुनिक वैज्ञानिक सुविधाओं से युक्त अनुसंधान व्यवस्था। • १५० वरिष्ठ छात्रों एवं अनुसंधान कर्ताओं हेतु छात्रावास। • मुख्य भवन में वैदिक वस्तुसंग्रहालय, ग्रंथालय, वाचनकक्ष, संगणक कक्ष। • यज्ञशाला। • ध्यानमंडप। • गौशाला। • अध्यापक निवास। • संगीत कक्ष। • अतिथि निवास। • कुलपति निवास। • रमणीय उद्यान। • विस्तीर्ण सभागार। • आधुनिक सुविधायुक्त कार्यालय। • भोजनगृह। • योग साधना केंद्र।

• भारतीय संस्कारपीठ। • बालक, युवा एवं वयस्कों हेतु संस्कार/साधना शिविर सुविधा।

वेदसेवा, राष्ट्रसेवा एवं गुरुसेवा के इस श्रेष्ठतम प्रकल्प-यज्ञ में अपनी समिधा अर्पण कर हम सब धन्यता का अनुभव करें। यह श्री भगवान् की सबसे महत्त्वपूर्ण सेवा है।

– श्री. चंद्रकांतजी इंदलकर

अहं और अपेक्षा जीवन को नर्क बना देती है। – पूज्यपाद

संत परम्परा के नवीन आदर्श : संत तुकाराम!

सन् १६३२ की बात है। अकाल का वह चौथा वर्ष था। चार वर्ष से ऋतु परिवर्तन के बाद भी सूर्य उसी तरह चमकता था; जैसे चैत्र-वैशाख में। सुबह से ही सूरज की तीखी किरणें लोगों के चेहरों को झुलसाती और पेट की भूख तन को निचोड़ डालती थी, जैसे पानी में भिगोए कपड़े को सुखाने के पूर्व धोबी निचोड़ देता है। किसान नंगे आकाश की ओर सूनी आँखों से ताकते रह जाते – शायद कोई बदली उठे और बरसने लगे, पर बदली तो क्या धुआँ भी उठता नहीं दिखाई देता था। धुआँ उठे भी तो कैसे! किसी के घर में अनाज के थोड़े से दाने होते तो कोई पकाता भी। लोग गाँव से निकलकर आस-पास के जंगलों में जाते और कंद-मूल ढूँढ़ते। कहीं मिल जाते तो उन्हें भी अपने कमजोर दाँतों से हौले-हौले चबा लेते।

पूना के पास देहु नाम का एक गाँव, उस गाँव में थी एक साहूकार की दुकान। साहूकार कहीं दूर देश से थोड़ा अनाज लाया, एक ही दिन में सारा अनाज बिक गया। बिक क्या गया- लोगों के पास जो कुछ था, उसे लेकर पहुँच गए साहूकार के पास और जितना हिस्से में आया, उतना अनाज उठा लाए। साहूकार भी उदारमना था। उसने अकाल के इन दिनों में अपने घर भरने की बात नहीं सोची, बात सोची कि गाँव के प्रत्येक व्यक्ति तक उसके हिस्से का अनाज पहुँच जाए। चाहता; तो वह ऐसे समय में खूब पैसा लूट सकता था, पर उसके सामने अपनी संपन्नता का आकर्षण फीका पड़ गया था। भूख से बिलबिलाती आँखों का सूनापन देखकर उसने पूरे गाँव में कहलवा दिया कि साहूकार के यहाँ अनाज आया है। सभी लोग पहुँच जाएँ और अनाज ले जाएँ।

जिनके पास कुछ था, वे तो कुछ लेकर पहुँच गए थे, जिनके पास कुछ नहीं था, उन्हें साहूकार की दुकान पर जाने में संकोच हो रहा था, पर भूख हर तरह का संकोच तोड़ देती है, उसकी आँच में काँच की तरह स्वाभिमान भी चटख जाता है। सो जिनके पास कीमत चुकाने के लिए नहीं थी, वे भी साहूकार की दुकान पर पहुँच गए और साहूकार ने उन्हें भी निराश नहीं किया। एक स्त्री आती है, साहूकार की ओर निहारती है। उसकी आवाज भी नहीं निकल रही है। पेट में अन्न नहीं है तो बोलकर कहे भी कैसे! और साहूकार की आँखों में विवशता तैर आती है।

उस विवशता को देखकर स्त्री की आँखों की याचना और भी घनीभूत हो उठी। साहूकार अपनी

> उस विवशता को देखकर स्त्री की आँखों की याचना और भी घनीभूत हो उठी। साहूकार अपनी जगह से उठा, शायद बिखरे हुए दाने समेटकर थोड़ा अनाज जुट जाए; लेकिन समेटा तो पहले ही जा चुका था। साहूकार जब खाली हाथ दुकान पर आता है, तो देखता है स्त्री मर चुकी है। कितनी कारुणिक स्थिति उत्पन्न हुई होगी उस समय-कहा नहीं जा सकता। साहूकार के अंतःकरण से एक 'अभंग' फूट पड़ती है, ''मुझे शरम आ रही है। यह स्त्री अन्न की आशा में आई थी, मेरे यहाँ अनाज नहीं है और मुझ से आशा टूट जाने के कारण वह मर गई है।''

जगह से उठा, शायद बिखरे हुए दाने समेटकर थोड़ा अनाज जुट जाए; लेकिन समेटा तो पहले ही जा चुका था। साहूकार जब खाली हाथ दुकान पर आता है, तो देखता है स्त्री मर चुकी है। कितनी कारुणिक स्थिति उत्पन्न हुई होगी उस समय–कहा नहीं जा सकता। साहूकार के अंतःकरण से एक 'अभंग' फूट पड़ती है, ''मुझे शरम आ रही है। यह स्त्री अन्न की आशा में आई थी, मेरे यहाँ अनाज नहीं है और मुझ से आशा टूट जाने के कारण वह मर गई है।''

यह 'अभंग' मराठी साहित्य की अमूल्य निधि है। इस अभंग के रचनाकार की वाणी महाराष्ट्रीय तथा मराठी साहित्य के मर्मज्ञों के लिए वेदवाणी बन गई। उक्त 'अभंग' के स्रष्टा थे साहूकार संत तुकाराम, जिनकी देहु में अनाज की दुकान थी। सन् १६२८ से महाराष्ट्र में अकाल चला आ रहा था। तुकाराम अपनी सारी संपत्ति इसी अकाल की भेंट चढ़ा चुके थे। उन्होंने गाया है। ''अकाल के कारण लोगों का धन निःशेष हुआ, उनका आत्मसम्मान खो गया, एक स्त्री 'अन्न–अन्न' करती भूख से तड़पती दम तोड़ गई और शरम से मेरा माथा जमीन में गड़ गया। मैं भी क्या करूँ! इस दुःख से ऊब गया हूँ। सारा व्यवसाय ही चौपट हो गया है।'' तुकाराम को व्यवसाय के चौपट हो जाने का रंज नहीं था, रंज था लोगों को भूख से तड़प–तड़पकर मरते देखने का।

तत्कालीन समाज में घर–परिवार के उत्तरदायित्वों से विरक्त होकर वैराग्य और भक्ति के गीत गाना ही साधु–संन्यासियों का आदर्श था; किंतु तुकाराम समाज में रहे, समाज के कठोर यथार्थ से सामना किया और कठिन परिस्थितियों, तोड़ डालने वाली विपत्तियों को उन्होंने सहा और संत–परंपरा में एक नई कड़ी जोड़ी।

पृष्ठ १६ का शेष ...

(निरक्षर श्रद्धालु भक्त पर ग्रंथकृपानुभूति)

श्रीमद्‌भागवत् के प्रसिद्ध कथावाचक एवं विद्वान् पण्डित श्रीनाथ जी पुराणाचार्य (वृन्दावन) इसे 'ग्रन्थ–कृपा' कहते हैं। उनका कहना है– 'गीता, श्रीमद्‌भागवत्, श्रीरामचरितमानस –जैसे ग्रन्थ मन्त्रात्मक हैं और चेतन हैं। इनका श्रद्धापूर्वक आश्रय लिया जाय तो पाठ करने वाले पर ये कृपा करते हैं।'

वृन्दावन में अनाज मण्डी में लगभग सन् ३६–३८ में एक अत्यन्त वृद्ध महात्मा के दर्शन किये थे। उनका नाम श्री अवधदास जी था। वे श्रीमद्भागवत को ही आराध्य मानते थे और सदा भागवत का मासिक क्रम से पाठ करते थे। वृद्धावस्था में दृष्टिलोप हो जाने पर भी आसन पर बैठकर ग्रन्थ सामने रखकर पाठ करते थे। ग्रन्थ तो उन्हें कण्ठस्थ था और उसी अनुमान से पन्ने उलटते जाते थे। कहने का तात्पर्य है कि आप अपने आराध्य–इष्ट के चरित, गुण आदि जिसमें हों उस ग्रन्थ को निष्ठापूर्वक अपना कर उसका नित्य पाठ करेंगे तो आप पर ग्रन्थ–कृपा भी होगी और आप में इष्ट के प्रति भक्ति का जागरण भी होगा।

– श्री सुदर्शन सिंह जी 'चक्र'
(कल्याण से साभार)

एक शतक के पश्चात् हुआ शुक्ल यजुर्वेद काण्व शाखा का घन पारायण।

प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज की मंगल प्रेरणा से महाराष्ट्र के नागपुर शहर में वे.मू. प्रवीणजी लिगदे गुरुजी द्वारा संचालित सिद्ध हनुमान मंदिर वेदविद्यालय में दि. २६ जनवरी से ९ फरवरी तक महाराष्ट्र में १०० वर्ष के बाद वे.मू. प्रवीणजी लिगदे एवं अन्य ५ वैदिकों द्वारा शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा का घन पारायण १५ दिनों में संपन्न हुआ। समापन समारोह में सरसंघचालक डॉ. श्री. मोहनजी भागवत, स्वामी श्री जितेंद्रजी महाराज, प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज सहभागी हुए। इस कार्यक्रम में स्वर्गीय वे.मू. श्री. मनोहरजी जोशी एवं डॉ. विजय कुमारजी पट्टजोशी को डॉ. मोहनजी भागवत के करकमलोंद्वारा '**महर्षि वेदव्यास पुरस्कार**' प्रदान किया गया। विशेष उल्लेखनीय यह है कि इस कार्यक्रम का आयोजन ३० वर्ष के युवा वैदिक श्री. प्रवीणजी लिगदे गुरुजी के द्वारा किया गया। प.पू. गुरुदेव ने श्री. प्रवीणजी लिगदे गुरुजी को सम्मानित किया।

सागर नारायण की गोद में कथा श्रवण का आनन्द!

परम पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री गोविंददेवगिरि जी महाराज के पावन सान्निध्य में सिंगापुर के सागर में दिनांक ६ दिसम्बर से ११ दिसम्बर २०१५ के मध्य क्रूज में ''भक्ति का महत्त्व एवं उसकी प्राप्ति का सुमार्ग'' विषय पर प्रवचन का आनन्द एवं दिनांक ११ से १४ के मध्य सिंगापुर दर्शन का कार्यक्रम बना।

सभी भक्तजन अत्यधिक उत्साही थे; किन्तु मैं इसमें भाग लेने का कतई इच्छुक नहीं था। यद्यपि दास ने अभी तक प.पू. गुरुदेव की २७१ कथा पूर्ण रूप से सुनी है तथा करीब ४०० से अधिक कथाओं में उपस्थिति दी है; किन्तु संभवतः शुद्ध वैष्णव संस्कारों ने सागर यात्रा हेतु संकोच उत्पन्न कर दिया हो। गुरु चरणों में चर्चा के उपरान्त इस धारणा को बल मिला कि यह कोई मौज मस्ती की यात्रा नहीं है; अपितु आध्यात्मिक सागर नारायण की तीर्थ यात्रा है। और सच कहूँ क्रूज पर आकर लगा कि यदि नहीं आया होता तो भूल होती।

हिन्द महासागर एवं पैसेफिक सागर के मध्य तैरते विशाल क्रूज के टॉप फ्लोर (१२ वीं मंजिल) पर स्थित बेहद सुन्दर हॉल में जहाँ से चारों और फैले हुए भगवान सागर नारायण के उस विराट-विग्रह के दर्शनों का स्मरण कर मन आज भी पुलकित हो उठता है तथा ऐसे भगवत दर्शनों के मध्य पूज्य गुरुदेव के बहुमूल्य प्रवचन सुनने का सद्भाग्य हमें रोज प्रातः ९ से १२ बजे तक मिला। लगता मानों पूज्य गुरुदेव सागर मंथन कर हमें उससे प्राप्त भक्तिरूपी अमृत का पान करा रहे हैं।

सागर यात्रा स्वयं बहुत बड़ी तीर्थयात्रा है। हमारी गंगाजी आदि सभी पवित्र नदियों का अंतिम विश्रामस्थल सागर ही है। रत्नाकर सागर से ही तो हमें बरसात प्राप्त होती है। जिससे सारी सृष्टि का अस्तित्व है। भगवान श्रीनारायण स्वयं समुद्र में ही विश्राम करते हैं। माँ महालक्ष्मी की उत्पत्ति भी तो समुद्र से हुई है। इसके अलावा सभी १४ रत्न समुद्रमंथन से ही तो उत्पन्न हुए थे। अमृत भी तो इसी सागर मंथन से ही उत्पन्न हुआ था। क्यों न हम भी इस सागर के मध्य स्थित होकर अपने स्वयं के मन का आत्मचिंतनरूपी मन्थन करें। भगवत्कृपा एवं गुरुकृपा के माध्यम से श्रेष्ठ विचारों का अमृतरूपी प्राप्ति हमें भी अवश्य उपलब्ध होगी। इस शरीर की प्राप्ति का एक मात्र लक्ष्य केवल भगवत्प्राप्ति ही है और यह भक्ति के माध्यम से हम सुगमता से प्राप्त कर सकते हैं।

भजस्व माम्

पू. गुरुदेव ने अपने प्रवचनों में हमें भक्ति का महत्त्व, सभी धर्मग्रंथों की कथाओं के माध्यम से समझाया। महाभारत, रामचरित मानस, ज्ञानेश्वरी, योगवासिष्ठ, दास बोध एवं श्रीमद्भगवद्गीता आदि ग्रंथों के अनेक प्रसंगों का वर्णन करते हुए हमें भक्ति की श्रेष्ठता का दिग्दर्शन कराया। प्रवचन में आपने कहा कि सभी शास्त्रों का सार श्रीमद्भगवद् गीता है तथा उसका सार स्वयं भगवान ने श्री गीता जी के अंतिम दो श्लोकों में अपने श्रीमुख सेबताया तथा उन दो श्लोकों का भी सार भगवान ने दो शब्दों में बतला दिया–

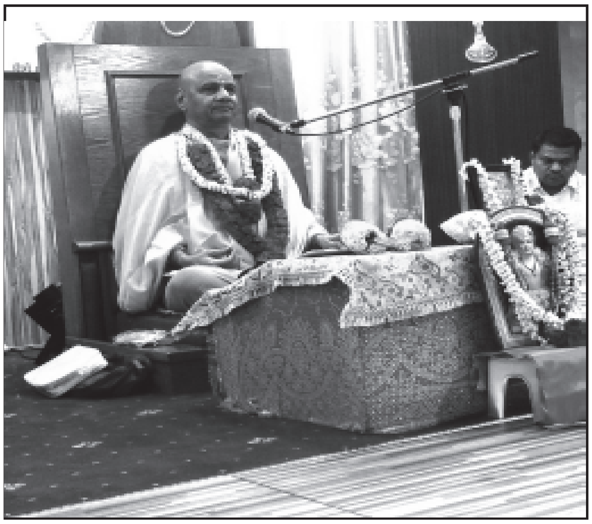

''भजस्व माम्'' यह, ''भजस्व माम्'' की स्थिति कैसे पैदा हो, इसी का रहस्य आपने चार दिनों के प्रवचन में बतला कर हमें धन्य कर दिया। पूज्य गुरुदेव ने इसका माध्यम साक्षात् भगवत् अवतार श्री नारद जी के भक्तिसूत्र को बतलाया।

भक्ति क्रिया नहीं भाव है

पूज्य गुरुदेव ने कहा कि भक्ति कोई क्रिया नहीं है। क्रियायें तो मोन्टेसरी या प्राइमरी स्टेज है; किन्तु ये क्रियायें भी की जानी चाहिए, उन्हें छोड़ना नहीं चाहिए। लेकिन असली बात तो भाव की जागृति है। सगुण साकार, भगवत्स्वरूप की पूजा-उपासना, ध्यान आदि करते-करते जब मन में उसके प्रति प्रेम, अनुराग उत्पन्न हो जाता है, तो ये क्रियायें स्वतः ही छूट जाती है। भक्ति एक भाव राज्य है, उसका एक मात्र रास्ता भगवद् प्रेम है अर्थात् अपना परमप्रेम केवल भगवद् चरणों में हो जाए और उसके बिना रहा नहीं जाए। साधक के मन में यह भाव हो कि मैं केवल और केवल श्री भगवान् का हूँ तथा श्री भगवान् मेरे हैं, बाकी मेरा कुछ भी नहीं है। यह स्थिति कैसे पैदा हो? यह पूज्य गुरुदेव ने भक्तिसूत्र के माध्यम से जिस सरल तरीके से बतलाया उसे हम शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते।

सागर नारायण से हमारी यह प्रार्थना है कि जिस भक्तिरूपी पौधे का अंकुर पूज्य गुरुदेव ने हमें सागर के मध्य बैठकर प्रसादी स्वरूप प्रदान किया है, वह हम सभी भक्तों के मन में, विचारों में विकसित हो। खूब फले फूले ताकि हमारा मनुष्य जन्म सफल हो सके। इसी में हमारी क्रूज-यात्रा की सफलता निहित है। – जय श्री सागर नारायण!

: विनीत :
दासानुदास – **श्री. नारायणदास मारू, सूरत**

वास्तव में संतों का सहवास एवं भगवत्कथा ये दोनों दुर्लभ ही हैं। तथापि संत समागम सहित हरिकथा और वह भी भगवान के साक्षात् सान्निध्य में, यह तभी संभव हो सकता है, जब किसी पुण्यशील हृदय में भगवान ज्ञानेश्वर महाराज की करुणा का आविर्भाव होता है। सौ. वंदनाजी मंत्री के नेतृत्व में राजस्थानी महिला मंडल, सेलू के द्वारा भगवद् धाम गुरुवायुर में स्वामी गोविंददेवगिरि जी महाराज के श्रीमुख से श्रीमद्भागवत कथा का संपन्न होना यह ज्ञानेश्वर महाराज की कृपा का ही तो फल है।

गुरुवायुर में संपन्न कथा के विषय में जानने से पूर्व गुरुवायुर के विषय में जानना भी आवश्यक है। भगवान श्रीकृष्ण के लीलासंवरण के उपरांत द्वारिकानगरी तो सागर में समा गई। लेकिन उससे पूर्व गुरु एवं वायु ने द्वारिका स्थित भगवान का श्रीविग्रह वहाँ से उठा लिया। यह वही विग्रह था जिसे प्रभु ने अपने माता-पिता, देवकी-वासुदेव को नित्यपूजा हेतु प्रदान किया था। गुरु और वायु उस विग्रह को दक्षिण भारत में ले आए। प्रभु अपनी इच्छा से वही विराजमान हो गए। आज के केरल राज्य में स्थित वही स्थान गुरु एवं वायु द्वारा

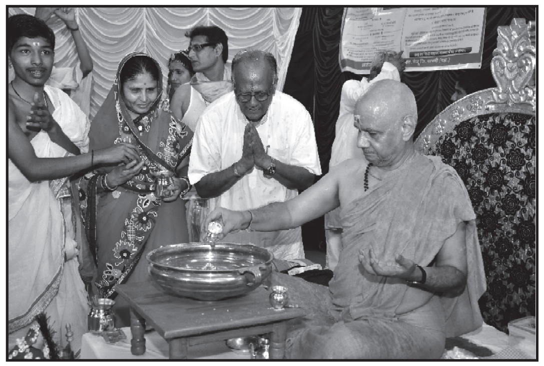

गुरुवायुर कथा ज्ञानयज्ञ में ६७ वां जन्मोत्सव सम्पन्न

संत समागम हरिकथा, तुलसी दुर्लभ दोय!

स्थापित विग्रह के कारण 'गुरुवायुर' के नाम से जाना जाता है।

ऐसे पवित्रतम धाम में संपन्न कथा के विषय में जो भी लिखा जाए, कम ही है। पूज्यश्री की मुख गंगोत्री से निःसृत हर एक अमृतबिंदु कर्णरंध्रों से हृदय तक पहुँच कर वहाँ के समस्त किल्मिषों को ध्वस्त करता हुआ मानों गुरुवायुरपति गोपालचन्द्र की लीलाज्योत्स्ना को बिखेरता जा रहा था। केवल गुरुवायुर पधारे भाविकों के ही नहीं, अपितु 'संस्कार' चैनल के माध्यम से विश्वभर के सभी भाविकों के रोम-रोम खिल उठे।

कथा में एक दिन पू. राजेन्द्रप्रसाद जी महाराज का आगमन हुआ एवं आशीर्वचन भी प्राप्त हुए। संस्कृत में ठीक ही कहा गया है- **'सतां सद्भिःसङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।'** अर्थात् संतों का मिलन किसी पूर्व पुण्य से ही प्राप्त होता है।

श्रीमद्भागवत का पाठ करने हेतु आलंदी, ढालेगाँव, धुलिया, खामगाव आदि वेदविद्यालयों से पधारे ६७ वैदिक छात्र सभी श्रोताओं के लिए विशेष आकर्षण रहें। वेदपाठी विप्रकुमारों के मुख से श्री

वेदव्यास विरचित वेदतुल्य श्रीमद्भागवत जी का पठन अपने आप में ही विशेष महत्त्व रखता है। भागवत जी के पाठ के साथ-साथ संपन्न हुआ।

जन्मदिवस का भव्य आयोजन

कथा का छठा दिन विशेष था। क्योंकि इसी दिन (२५ जनवरी, २०१६) आंग्ल वर्षगणना के अनुसार पूज्यश्री का ६७वां जन्मदिन था। दुग्धशर्करा। प्रातःकाल से ही विभिन्न उत्सवों के माध्यम से यह दिन उत्साह से मनाया गया। कथा से पूर्व चली शोभायात्रा रमणीय थी। एक अलंकृत गजराज के साथ होने से वह अधिक रमणीय हुई। नाम-संकीर्तन करते हुए सब के कथा स्थल पहुँचने पर प्रकट कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें पूज्यश्री के चरणों में अनेकों स्नेहोपहार तथा शब्दोपहार समर्पित किये गए।

इसी दिन सायंकाल की बेला में सहस्ररुद्री का विशेष आयोजन किया गया। इस अवसर पर यजमानों के हाथ से पवित्र अभिषेक-कलश ग्रहण कर, ब्राह्मणों के सस्वर मंत्रघोष की साक्षि में पूज्यश्री जब श्रीयंत्र का अभिषेक कर रहे थे तब मानों संमुख उपस्थित सभी भाविकों के हृदय में आनंदाभिषेक चल रहा था। इस अभिषेक के चलते दूसरी ओर, पूज्य स्वामीजी के साधुतामय जीवन के विषय में पू. राजेन्द्रदास जी महाराज, कांचीपीठ के शंकराचार्य पू. जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज, पू. स्वामी रामदेव बाबा, आदि महानुभावों के मन्तव्यों का चलच्चित्रण पुलकित किये जा रहा था।

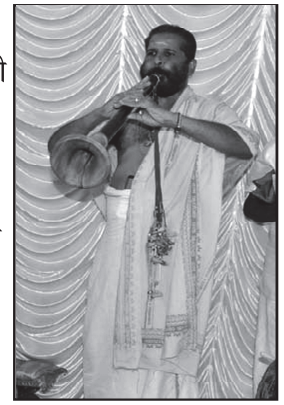

स्वामी जी के जन्मदिवस के अवसर पर उनके जन्मग्राम बेलापुर एवं अध्ययन स्थली वाराणसी के भी दर्शन हो सके, ये तंत्रज्ञान के उपकार हैं।

'वेद बिना मति नहीं, गाय बिना गति नहीं'

इस महामंत्र को लेकर आगे बढ़े स्वामी जी ने वेदसेवा की भारतमाता की सेवा मानकर उसके साथ-साथ गीता परिवार के माध्यम से बालसंस्कार का एवं कथाओं के माध्यम से जनमानससंस्कार का जो अनुपम कार्य किया है वह महत्तम है। इस कार्य का परिचय विश्व के संमुख प्रस्तुत करने हेतु कथा के आरंभ में वेदविद्यालयों के विषय में स्वयं स्वामीजी ने जो भाव प्रकट किये उससे विश्वभर के भाविकों के मन में वेदनिष्ठा की जागृति एवं अभिवृद्धि निश्चय ही हुई।

पू. स्वामीजी के करकमलों से प्रारंभ हुए सभी सत्कार्यों में अनेकों हाथ जुड़ जाए ऐसी प्रार्थना गुरुवायुरपति गोपाल से करता हुआ लेखनी को विराम देता हूँ।

प्रणव पटवारी

कोलकाता में श्रीमद्‌भागवत कथा का दिव्य आयोजन सम्पन्न

परम पूज्य स्वामी गोविंददेवगिरि जी महाराज के श्रीमुख से कोलकाता में लेकटाउन अंचल के बड़े पार्क में ईस्ट कोलकाता नागरिक फाउण्डेशन द्वारा सप्ताह व्यापी अष्टोत्तरशत श्रीमद्‌भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। दि. २७ दिसम्बर २०१५ से २ जनवरी २०१६ तक चले इस धार्मिक अनुष्ठान का शुभारम्भ शोभायात्रा से हुआ; जिसमें पूज्य गुरुदेव को रथ पर बैठाकर नगर परिक्रमा की गयी। इसमें सैंकड़ों नर-नारी सम्मिलित हुए। अनुष्ठान के मुख्य यजमान सुविख्यात उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री जगदीश प्रसाद जाजू एवं श्रीमती कंचन जाजू थे।

सत्र का शुभारम्भ भारत सेवाश्रम संघ के स्वामी दिलीप जी महाराज ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उनके साथ स्थानीय विधायक सुजीत बोस, उद्योगपति प्रदीप तोदी, जुगलकिशोर कोटड़ीवाल, संस्था अध्यक्ष प्रीतम दफ्तरी, उद्योगपति गोपाल सारड़ा, गोविन्द सारड़ा, हेमन्त बांगड़, शिवनारायण मोहता आदि दर्जनों गणमान्यजन मंचासीन थे। पूज्य स्वामी जी ने सप्ताहव्यापी आयोजन में श्रीमद्‌भागवत कथा के सभी प्रसंगों की विस्तारपूर्वक विवेचना कर उपस्थित भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया। अपने प्रभावी प्रवचन के दौरान महाराजश्री ने भारतीय संस्कृति के विविध उज्ज्वल पक्षों पर प्रकाश डालते हुए लोगों को पाथेय प्रदान किया। उन्होंने कहा कि नयी पीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति की आँधी से बचाने के लिए हमारे धार्मिक प्रसंगों का प्रचार नितान्त आवश्यक है। भारतीय संस्कृति को विश्व ने शिरोधार्य किया; क्योंकि हमारी मूलभूत अवधारणा

कोलकाता कथा में वेदमंत्रों की प्रस्तुति देते गौरांग वेदविद्यालय के छात्र

मनुष्य काम करने से नहीं अपितु नहीं करने से जल्दी मरता है। – पूज्यपाद

'सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की है। आपने वैदिक शिक्षा के प्रसार की नितान्त आवश्यकता पर भी बल दिया। इस दिशा में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा देश भर में संचालित किए जा रहे २६ विद्यालयों की भी आपने चर्चा की। इसी अवसर पर मणिपुर में स्थापित हो रहे वेदविद्यालयपीठ के लिए लोगों ने उदारता पूर्वक सहयोग दिया।

कथा आयोजन में सर्वश्री विश्वनाथ सेक्सरिया, सजन कुमार बंसल, प्रदीप-शोभा तोदी भी उपस्थित रहा करते थे।

कोलकाता प्रवास के दौरान पूज्य महाराजश्री ने गोविन्दपुर स्थित गौरांग वेदविद्यालय का भी भ्रमण किया। इस विद्यालय से उत्तीर्ण हुए ९ विद्यार्थियों को सभा-मंच पर पूज्य गुरुजी ने प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया।

आयोजक संस्था के पदाधिकारियों ने विद्यार्थियों का तिलक कर शुभाशंषा की। ईस्ट कोलकाता नागरिक फाउण्डेशन कोलकाता की अग्रणी सेवा-संस्था है। पूर्व में भी इस संस्था की ओर से कोलकाता एवं आस्ट्रेलिया में गुरुजी के श्रीमुख से कथाओं का आयोजन कराया जा चुका है। आयोजन की सफलता हेतु मुख्य यजमान जगदीश जाजू एवं उनके सभी परिजनों के साथ अशोक भरतिया, हरिकिशन राठी, प्रेमलता दफ्तरी, संतोष अग्रवाल, महेश अग्रवाल, दिलीप सराफ, मनोज बंका, प्रकाश राजाजी, श्रीराम अग्रवाल, पार्वती अग्रवाल, शशि भरतिया सहित संस्था के लगभग दो सौ कार्यकर्ता सक्रिय थे। जाजू परिवार ने गुरुजी के कोलकाता के प्रवास को सुगम बनाने हेतु आन्तरिक सेवा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार प्रकाश चण्डालिया ने किया।

श्रीकृष्ण वेदविद्यालय, पानीपत

वेदविद्यालय समाचार

गीता जयन्ती

संत ज्ञानेश्वर गीता प्रचार समिति के तत्त्वावधान में श्रीकृष्ण वेदविद्यालय द्वारा दिनांक १९ से २१ दिसम्बर २०१५ तक गीता जयन्ती का कार्यक्रम धूम-धाम से आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत वेदविद्यालय के छात्रों द्वारा गीता एवं वेद मंत्रों की कंठस्थ प्रस्तुति दी गई तथा एक साहित्य प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

इसी अवसर पर एक भव्य शोभा यात्रा भी निकाली गई; जिसका स्थान-स्थान पर शहरवासियों द्वारा स्वागत किया गया। मुख्य कार्यक्रम स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज के पावन सान्निध्य एवं पानीपत की विधायक श्रीमती रोहिता खेड़ी, विधायक श्री महिपाल टाडा, शहर की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पू. स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज ने हरियाणा के पानीपत जिले में पहला वेदविद्यालय आरम्भ करने हेतु प.पू. स्वामी श्री गोविंददेवगिरि जी महाराज की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इसी प्रकार दिनांक ३ जनवरी २०१६ को विद्यालय के छात्रों द्वारा जगन्नाथ मन्दिर में नव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित १०८ सुन्दर काण्ड पाठ में सहर्ष भाग लिया। इससे प्रभावित हो स्वामी श्री मुक्तानन्द जी महाराज व जिला न्यायाधीश डॉ. निलिमा सांगला श्रीकृष्ण वेदविद्यालय में पधारी एवं आपने यहाँ की सुन्दर व्यवस्था एवं छात्रों के अच्छे स्तर पर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र जी अग्रवाल द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया गया।

समसामयिक

भारतीय साहित्य सभा का आरंभ

भारत का नाम भारत इसीलिए रखा गया; क्योंकि यहाँ का हर व्यक्ति ज्ञान में रत रहता था। यह ज्ञान उसे श्रेष्ठ विचारकों के सान्निध्य में बैठने से प्राप्त होता था। इन्हीं विचारकों ने इस देश की गरिमा को बढ़ाया और सम्पूर्ण विश्व को भारत माता को नमन करने को मजबूर कर दिया। भारत को उसी ने समझा जिसने भारत के विचारों को समझा; किन्तु वर्तमान में भारत के ही कुछ विचारकों द्वारा स्वार्थवश भोगवादी और देश विरोधी साहित्य का अधिकाधिक प्रचार किया जा रहा है। जिसके कारण भारतीय मूल विचारों की दिन–प्रतिदिन क्षति हो रही है।

चिंतन और चरित्र दोनों में ही विकृति पैदा करने वाले भोगवादी वासनात्मक साहित्य में आई बाढ़ के कारण पू. गुरुदेव के भीतर चिंता जगी कि किस प्रकार भारतीय मूल विचारों की रक्षा की जाय और इस देश का संत जब–जब चिंतित हुआ, तब–तब देश की जनता का हित हुआ। पू. गुरुदेव की इस लोकहित की चिंता ने एक अत्यंत श्रेष्ठ संस्था का निर्माण किया, जिसका नाम '**भारतीय साहित्य सभा**' रखा गया।

श्री दत्तजयंती के मंगल पर्व पर दिनांक २४ दिसम्बर २०१५ को पुणे के उच्च कोटि के विचारकों के साथ भारतीय संकुल में पू. गुरुदेव के सान्निध्य में एक बैठक का आयोजन किया गया; जिसमें पू. गुरुदेव ने बैठक का हेतु बतलाकर श्री शांतनु जी रीठे को वर्तमान में ''**भारतीय साहित्य सभा**'' की आवश्यकता विषय पर अपनी प्रस्तावना देने को कहा और श्री शान्तनु जी ने इसे बहुत ही सुन्दर रीति से पूर्ण किया। पूज्यवर एवं श्री शान्तनु के विचारों को बैठक में उपस्थित निवृत्त प्राचार्य, वेद उपनिषद् के अभ्यासक एवं श्रेष्ठ विचारक डॉ. श्री दिलीप जी गोगटे, लोकमंगल फाउंडेशन, पुणे द्वारा संचालित गोविन्द बाल संस्कार केन्द्र के संचालक एवं एक श्रेष्ठ कवि श्री मन्मथ जी बेलुरे, संतकृपा मासिक के प्रधान संपादक श्री भारवि जी खरे, वरिष्ठ लेखिका डॉ. रजनीताई पतकी, अनेक भाषाओं की विदुषी एवं विचारवान लेखिका एवं वक्ता कु. मनीषा बाठे, श्रेष्ठ लेखिका मुक्ता गरसोले, रामकथा प्रवक्ता स्वाती वालिम्बे एवं गीता परिवार के अखिल भारतीय कार्य विस्तारक भागवत प्रवक्ता अशोकजी पारीक आदि चिंतकों ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस बैठक में प. पू. गुरुदेव के विचार और मार्गदर्शन तो प्रमुख थे ही; किन्तु मनीषाजी बाठे के द्वारा प्रस्तुत विचार अत्यंत विचारणीय रहे। आपने वर्तमान में हो रहे धर्म परिवर्तन हेतु हमें जागृत होने की आवश्यकता के साथ–साथ स्वयं के द्वारा किये गए कार्य का अनुभव एवं त्रुटियों के बारे में ज्ञान करवाया। चर्चा को मूल विषय से हटते देखकर डॉ. श्री गोगटे जी ने साहित्य सभा के स्वरूप और आवश्यकता पर चर्चा करने के लिए प्रेरित किया। आपने बताया कि भारत विरोधी संस्थाओं के द्वारा समाज को दिशाहीन करने वाले साहित्य के मुकाबले भारतीय विचारधारा को बढ़ाने वाले साहित्य का अधिकाधिक प्रचार करने हेतु हमारे साहित्य को सरल, सहज, सर्व सुलभ प्रकाशन एवं निर्मिती की आवश्यकता है। समय रहते एक गतिशील तरीके के साथ अगर इस कार्य का आरंभ नहीं किया गया; तो आने वाली पीढ़ी के मन–मस्तिष्क में पाश्चात्य विचारधारा घर कर जाएगी। जिन–जिन को इस परम्परा ने छुआ है; उनके चिंतन और चरित्र हमारी संस्कृति पर आघात कर रहे हैं। उसका दुष्परिणाम आज हम सब लोग देख रहे हैं। इसलिए श्रेष्ठ विचारकों को समाज में बढ़ रहे दुष्परिणाम को रोकने के लिए एक साथ मिलकर भारतीय साहित्य सभा के कार्य को गति देनी चाहिए।

भोगवादी और परकीय आक्रमण को रोकने के लिए समाज के सामने उत्तम साहित्य की निर्मिती, वितरण, प्रकाशन, परिचय संवाद, परिसंवाद शिविर एवं सभाओं का आयोजन करते हुए समाज को जागृत रखने तथा हमारी पावन परंपरा का संरक्षण करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। सभी विचारकों को एक जगह लाकर सब एक होकर '**भारतीय साहित्य सभा**' के रथ को गति देने का शुभ संकल्प लेकर दीप प्रज्वलित कर भारतीय साहित्य सभा की स्थापना की घोषणा हुई।

– श्री भारवी जी खरे

गीता परिवार

नासिक जिले की सभी शासकीय शालाओं में प्रज्ञा-संवर्धन का प्रशिक्षण

गीता परिवार द्वारा विकसित प्रज्ञा-संवर्धन प्राणायाम का अभ्यास अब महाराष्ट्र के नाशिक जिले की सभी जिला परिषद् विद्यालयों में किया जाएगा। दि. २८ एवं ३१ दिसम्बर २०१५ एवं दि. ४ जनवरी २०१६ को संपन्न प्रशिक्षण शिविर में शिक्षकों एवं मुख्याध्यापिकों को इसका प्रशिक्षण दिया गया। सबसे पहले दि. २८ दिसम्बर को सात विद्यालयों के शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापिकों के समक्ष प्रात्यक्षिक रूप से एक प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण सत्र में; जिसका सञ्चालन श्री दत्ता भांदुर्गे एवं श्री गिरीश डागा ने किया जिला शिक्षाधिकारी स्वयं भी उपस्थित थे। उन्होंने कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी से संपर्क कर नासिक जिले के सभी विद्यालयों में इसे कार्यान्वित करने की इच्छा व्यक्त की। तत्पश्चात् दि. ५ जनवरी को नासिक में ५३० जिला परिषद् विद्यालयों के ११०० शिक्षक एवं मुख्याध्यापकों को प्रज्ञा संवर्धन का प्रशिक्षण स्वयं डॉ. संजय जी मालपाणी ने दिया। प्रत्येक विद्यालय से एक-एक शिक्षक इस विषय के लिए नियुक्त किया गया है, वे अपने-अपने विद्यालयों में इसका प्रशिक्षण विद्यार्थियों को देंगे। जाग्रत प्रज्ञा की शक्ति से संपन्न विद्यार्थी भविष्य में राष्ट्र की उन्नति में सहायक होंगे, ऐसा विश्वास है।

मुम्बई के केशव सृष्टि में राष्ट्रीय कार्यकर्ता शिविर संपन्न

दिनांक १७ से २० दिसम्बर २०१५ के बीच मुम्बई स्थित केशवसृष्टि के रामरत्ना विद्या मंदिर में गीता परिवार का अखिल भारतीय कार्यकर्ता शिविर संपन्न हुआ। श्रद्धेय स्वामी गोविंददेवगिरि जी महाराज का पूर्णकालिक सान्निध्य इस शिविर की सबसे बड़ी विशिष्टता थी। त्रि-दशकपूर्ति के निमित्त श्रद्धेय स्वामी जी ने दिसम्बर २०१६ में १८ राज्यों से बच्चों के संस्कार-सम्मेलन का लक्ष्य सभी को दिया। इस सम्मेलन में १०८ बच्चे गीताजी के सम्पूर्ण १८ अध्याय कंठस्थ करके आएँ, ऐसा लक्ष्य भी दिया गया।

योग सोपान पुस्तक का प्रकाशन

गीता परिवार द्वारा विकसित योग-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के प्रथम भाग का प्रकाशन 'योग सोपान (पुष्प-१)' के रूप में किया गया। डॉ. संजय जी मालपाणी की संकल्पना एवं योगाचार्य श्री सुरेश जी जाधव के मार्गदर्शन में हैदराबाद शाखा के कार्यकर्ता श्री शैलेश जी गुप्ता द्वारा मूल अंग्रेजी में लिखित पुस्तक का यह मराठी अनुवाद है। यह पुस्तक विद्यार्थियों को विद्यालय में सिखाये जाने योग्य आवश्यक १६ आसनों का सचित्र विवरण प्रस्तुत करती है।

संगमनेर में योग सोपान (प्रथम) का प्रशिक्षण

गत तीन महिनों में श्री निलेश पठाडे एवं श्री दत्ता भांदुर्गे द्वारा संगमनेर के तीन विद्यालयों में योग सोपान (प्रथम) का प्रशिक्षण दिया गया। मालपाणी विद्यालय के १५०, कलशेश्वर विद्यालय के ३५० एवं पद्मरसिक विद्यालय के ६०० छात्र–छात्राओं ने योग सोपान (प्रथम) का अभ्यासक्रम पूर्ण कर प्रशस्ति–पत्र प्राप्त किया।

योग सोपान के प्रशिक्षण के लिए संगीतमय योगाभ्यास ऑडियो का निर्माण विद्यालयों में योग सोपान के प्रशिक्षण के लिए प्रथम स्तर के अभ्यासक्रम हेतु किया गया। इस ऑडियो के निर्माण से अब विद्यालयों के लिए योग सोपान के प्रथम पुष्प का अभ्यास और भी सरल हो जाएगा।

गीता जयंती उत्सव, आर्वी

संगमनेर शाखा द्वारा गीता जयंती के अवसर पर सामूहिक गीता पाठ का आयोजन किया गया।

गीता जयंती उत्सव के निमित्त चित्रकला स्पर्धा, गीता प्रश्नमंच एवं गीता अध्याय कंठस्थीकरण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दो–दिवसीय कार्यक्रम के पहले दिन चित्रकला स्पर्धा में ९०० बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को दो गटों में विभाजित कर स्पर्धा ली गयी एवं विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

दूसरे दिन भगवान श्री कृष्ण एवं गीताजी के पूजन के पश्चात् १२ वें एवं १५ वें अध्याय के कंठस्थीकरण स्पर्धा का प्रारंभ हुई, इसी समय गीता प्रश्न मञ्जूषा का भी आयोजन किया गया। इस पूरे कार्यक्रम के लिए सौ. उषा वैद्य, श्वेता वाजपेयी, उज्ज्वला चौधरी, पल्लवी गुल्हाने, नीलिमा कहारे, तृप्ति पावडे, काजल अग्रवाल आदि ने परिश्रम किया।

संस्कार बालभवन की नृत्य–छात्राओं ने जीती राज्य स्तरीय स्पर्धा

स्पोर्ट्स–डान्स एसोसिएशन ऑफ महाराष्ट्र द्वारा आयोजित राज्य–स्तरीय स्पर्धा में संस्कार बालभवन के ओड़िसी नृत्य की छात्राओं ने भाग लिया। १२ वर्ष के आयु गुट में इन बच्चों ने शास्त्रीय नृत्य के अंतर्गत स्वर्ण पदक हासिल किया। इसके अतिरिक्त लोकनृत्य और एकल नृत्य की स्पर्धा में भी बच्चों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता। बालभवन की छात्राओं ने कुल ६ स्वर्ण एवं १ रजत पदक जीत कर गीता परिवार का नाम रोशन किया।

मानवत में शिविर सम्पन्न

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी मानवत गीता परिवार द्वारा आयोजित मस्तिष्क संवर्द्धन योग शिविर अत्यंत उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस शिविर में १०० बच्चों को सूर्यनमस्कार, प्राणायाम और अनेक आसन सिखाये गये।

योग मार्गदर्शन के लिए हिंगोली से सौ. शीतल तापड़िया को आमंत्रित किया गया। म्युजिक के साथ बच्चों ने सूक्ष्म व्यायाम का आनंद उठाया। योग के साथ–साथ शिविर में मनोरंजक खेल तथा हस्तकला भी सिखायी गयी।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्रीमती शीलादेवी चांडक, सौ. रामकंवर लड्डा (काकीजी), सौ. संगीता तिवारी, माधुरी काबरा, कोमल मंत्री, नम्रता मंत्री, वैष्णवी बांगड, रामेश्वरी सारड़ा, राधिका लड्डा, माधुरी लड्डा आदि ने परिश्रम के साथ अपना योगदान दिया तथा डॉ. राजकुमार जी लड्डा एवं भराडीया सर ने मार्गदशन किया।

गीता परिवार दिल्ली

गीता परिवार दिल्ली द्वारा विगत ८ वर्षों से स्थानीय बालकों में संस्कार सिंचन का कार्य किया जा रहा है। विगत दिनों कुरुक्षेत्र के १००० बालकों द्वारा गीता जयन्ती पर्व पर ५० कार्यकर्त्ताओं की देखरेख में १२वें एवं १५वें अध्याय का पारायण किया गया। साथ ही अन्य कार्यक्रम भी सम्पन्न किये गये। इस अवसर पर श्री शेखर वशिष्ट द्वारा गीताजी के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया। त्रिदशक पूर्ति के निमित्त गीता परिवार द्वारा दो नये वर्ग भी आरम्भ किये गये।

गीता परिवार जयसिंगपुर द्वारा प्रज्ञा संवर्धन एवं गीता पाठान्तर हेतु सम्पन्न कार्यशाला एवं शिविर

गीता परिवार जयसिंगपुर की उत्साही संचालिका श्रीमती प्रमिला जी माहेश्वरी के सतत् सद्प्रयत्नों से जयसिंगपुर ही नहीं; अन्य कई क्षेत्रों में भी बालकों में संस्कार रोपण का कार्य तीव्रगति से चल रहा है। ज्ञातव्य है कि गीता परिवार द्वारा संचालित संस्कार रोपण के इन कार्यों में सभी जाति एवं धर्मों के बालक/बालिकाएँ सहर्ष भाग लेते हैं। कई विद्यालयों ने इसे स्वेच्छिक रूप से आगे बढ़कर अपनाया है। इनमें छात्रों को भारतीय संस्कृति के अनुकूल संस्कारों के ज्ञान के साथ ही, गीता पठन, सूर्यनमस्कार, योगासन आदि का अभ्यास करवाया जाता है।

विगत दिनों जन्माष्टमी पर ६५० बालकों ने रंग भरण प्रतियोगिता में भाग लिया; जबकि गीता जयन्ती पर १३ दिसम्बर २०१५ को रंगभरण प्रतियोगिता के साथ ही महाभारत पात्र वेशभूषा स्पर्धा की गई, जिसमें करीब ५०० बालकों ने भाग लिया। इसी प्रकार वेशभूषा स्पर्धा ली गई; जिसमें करीब ५०० बालकों ने भाग लिया। जयसिंगपुर और परिसर के ९५ स्कूलों तथा एक महाविद्यालय में प्रज्ञा संवर्धन एवं गीता पाठान्तर प्रतियोगिता हुई। इसमें ७ स्कूल पिछड़ी जनजाति के थे।

नववर्ष की शुरूआत गीता पाठान्तर से हुई जिसमें ९२० बालकों ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों में श्री बी.बी. गुरु, श्री अशोकजी सारड़ा, संदीप पाटील, ओमप्रकाश कांबथे तथा उनके सहयोगी, विनीता बियाणि, कल्पना पाटील, अनघा क्वाणे, अर्चना झंवर, राखी झंवर, जयश्री दीक्षित, शशीकला चकोने, पुष्पा सारड़ा शांता सोनी, आशा, मालपाणी, उर्मिला, रेखा मालपाणी, अनुराधा, स्नेहा इत्यादि कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

प्रज्ञा संवर्धन गीता पाठांतर कार्यशाला एवं शिविर जयसिंगपुर, एक दृष्टि!

दिनांक	गांव/शहर	स्कूल का नाम	गीता परिवार शिविर
१५ से १७ मार्च	सातारा	–	शिविर/कार्यशाला
२८ से ३०मार्च	बनहट्टी (कर्नाटक)	–	शिविर/कार्यशाला
८ से १३ अप्रेल	उगार (कर्नाटक)	–	शिविर/कार्यशाला
१९ से १९ अप्रेल	जयसिंगपुर	माय स्कूल	शिविर
२१ से २३ अप्रेल	जालना	–	कार्यशाला
२४ से २२ अप्रेल	शिरोल	कन्या शाला	शिविर
२९ अप्रेल से ३ मई	मुम्बई	रामरत्ना (I.N.)	शिविर/कार्यशाला
४ से १० मई	महाबलेश्वर	–	शिविर
२० से २६ जून	पंढरपुर	–	योग शिविर
२९ जून से ३ जुलाई	मुम्बई	रामरत्ना (I.N.)	शिविर/कार्यशाला
५ से ११ जुलाई	गुलबर्गा	चंद्रकांत पाटील (C.B.S.E.)	शिविर/कार्यशाला
१ से २ अगस्त	इचलकरंजी	टीचर्स ट्रेनी	कार्यशाला
४ अगस्त	जयसिंगपुर	तहसील टीचर ट्रेनिंग	कार्यशाला
१ से ५ सितम्बर	भुसावल- वरणगांव	I.T. कॉलेज चारे किड्स	शिविर
७ से११ सितम्बर	मुम्बई	रामरत्ना	
१२ से १५ अक्टूबर	आसेगांव (विदर्भ)	छत्रपति कॉलेज	शिविर
	चाँदूर बाजार	आष्टे विद्यालय	शिविर
	नागरवाटी		

पृष्ठ १४ का शेष ...

(कैसे मनाएं राम जन्मोत्सव?)

सभी के साथ सद्व्यवहार करें।आपस में प्रेम रखें, अपने अच्छे बर्ताव से सबको प्रसन्न रखें, किसी से झगड़ा न करें।

८. ब्रह्मचर्य का पालन करें।

९. श्रीरामनवमी का व्रत करें।

१०.रामनवमी के दिन श्रीराम जन्मोत्सव मनाया जाय, सभाएँ की जायँ, जिनमें रामायण का प्रवचन और रामायण-सम्बन्धी शिक्षाप्रद व्याख्यान हों। कहने और सुनने वाले अपने अंदर श्रीराम के से गुण आयें-इसके लिये दृढ़ निश्चय करें और श्रीराम से प्रार्थना करें।

११. मेले में बाधा न आती हो; तो श्रीराम की सवारी का जुलूस नगर-कीर्तन के साथ निकाला जाए।

इन ग्यारह बातों में से जिनसे श्रीराम-नाम का जप, कीर्तन, माता-पिता आदि गुरुजनों के चरणों में प्रणाम, सबसे प्रेम, ब्रह्मचर्य का अधिक से अधिक पालन, सत्य-भाषण आदि बातें तो जीवन भर पालन करने योग्य हैं। इनका अभ्यास अधिक से अधिक बढ़ाना चाहिये। श्रीराम की भक्ति के लिये इन्हीं व्रतों की आवश्यकता है।

गीता परिवार लखनऊ की प्रचलित नववर्ष उत्सव की सफल प्रस्तुति!

परम पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा से गत १६ वर्षों से गीता परिवार लखनऊ एक नवीन उपक्रम कर रहा है ''**प्रचलित नववर्ष उत्सव**''। ३१ दिसम्बर की रात्रि में जब लोग भौतिक साधनों के साथ राजसी एवं तामसिक वातावरण में टीवी, क्लब स्थानों पर मनोरंजन ढूढ़ते हैं उस समय गीता परिवार उन्हें राष्ट्रभक्ति एवं ईश्वरभक्ति से परिपूर्ण एक सात्विक विकल्प देता है।

इसके अन्तर्गत पिछले कुछ वर्षों में कृष्णम, दशावतार आदि महानाट्यों का मंचन एक विशेष उपलब्धि रहा है। इस वर्ष एक कदम और बढ़ाते हुए एक नवीन नाट्य ''**भारत कल आज और कल**'' का मंचन किया गया। देश भक्ति से ओतप्रोत इस नाट्य में भारत के गौरवशाली अतीत का मंचन तत्पश्चात् मुस्लिम आक्रान्ताओं का आक्रमण, अंग्रेजों द्वारा दमन, महाराणा प्रताप व लक्ष्मीबाई का शौर्य, भारत के स्वर्णयुग के पतन के कारण, वर्तमान स्थिति एवं भविष्य एवं भविष्य का भारत, इन बातों को विभिन्न केन्द्रों के लगभग १०० बालकों के नृत्य नाटिकाओं व विभिन्न प्रकल्पों द्वारा लगभग ५०० लोगों की उपस्थिति में ३१ दिसम्बर की रात्रि ८.३० से १२.३० तक श्रीदुर्गाजी मन्दिर कल्याणकारी आश्रम, शास्त्रीनगर में मंचित किया गया।

कार्यक्रम का अंत सदैव की भांति भगवन्नाम संकीर्तन व हनुमान चालीसा का पाठ करते हुए नववर्ष में प्रवेश एवं ''ज्योत से ज्योत जलाते चलो'' गीत के साथ भव्य मनमोहक प्रकाशोत्सव के साथ किया गया। प्रकाशोत्सव के समापन में लोगों ने नववर्ष हेतु प्रकाश को साक्षी मानकर ३ संकल्प भी लिए। **पहला संकल्प** – मैं अन्न का एक दाना भी व्यर्थ नहीं जाने दूंगा, **दूसरा संकल्प**– मैं अपने समय को व्यर्थ नहीं जाने दूंगा एवं कुछ समय देश सेवा एवं समाज सेवा में अवश्य लगाऊँगा, **तीसरा संकल्प** – मैं प्रधानमंत्री जी द्वारा चलायी गयी स्वच्छ भारत योजना का हिस्सा बनूँगा, स्वयं कचरा नहीं फैला कर दूसरों को भी स्वछता के लिए प्रेरित करूँगा।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती पूजा जी गोयल द्वारा किया गया। ताराचंदजी, अजय जी द्वारा कार्यक्रम का प्रारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से किया गया इसके पश्चात् आये हुए सभी दर्शकों को अनुराग भैया के द्वारा गीता परिवार का परिचय व कार्यों का विवरण दिया गया।

इसके पश्चात् पीली कॉलोनी केन्द्र के चिरंजीव जायसवाल, प्रखर मिश्रा, कान्हा दीक्षित, प्रशांत सिन्हा, स्नेह सिन्हा, आराधना शर्मा, आकांक्षा शर्मा, शुभी रस्तोगी खुशबू निषाद नन्हें मुन्ने बालकों द्वारा बाल नृत्य ''नन्हें पंख'' प्रस्तुत किया गया एवं शास्त्री नगर केन्द्र के स्वयं सेवक अभय, अमन, राहुल, अविरल, अनुराग, अमन, आर्यन, अभिषेक, अभिनव द्वारा ''नटखट कान्हा'' नृत्य प्रस्तुत किया गया।

इसके पश्चात् गीता परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रत्नसेन जी तिवारी व उनके साथी स्मृति जी, प्रभावती जी, श्री विजय जी द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन पर आधारित एक उत्कृष्ट नाट्य ''रत्ना मेरी गुरु'' का मंचन किया गया एवं मोती नगर केन्द्र द्वारा सिद्धार्थ राय भैया के मार्ग दर्शन पर आधारित एक अति सुन्दर नृत्य का प्रस्तुतीकरण किया गया तथा गीता परिवार लखनऊ के शास्त्री नगर केन्द्र, ऐशबाग केन्द्र के लगभग ८० बालक बालिकाओं द्वारा सामूहिक रूप से देश भक्ति के विषय पर एक अत्यंत सजीव, मनोहारी व नवीनतम प्रौद्योगिकी का

....शेष पृष्ठ ३३ पर

सच्चे ब्राह्मणत्व का पालन करने वाले संत एकनाथ

वर्ण-व्यवस्था की स्थापना किसी समय समाज को सुसगंठित बनाए रखने और उन आवश्यकताओं की उचित रूप से पूर्ति होते रहने के उद्देश्य से की गई थी। उसमें ब्रह्मण को सर्वोच्च पद दिया गया था। साथ ही उनके कर्त्तव्य भी उतने ही कठिन रखे गए थे। त्यागमय जीवन बिताना और समाज की अधिक से अधिक सेवा करना ब्राह्मणत्व का आर्दश बताया गया था। जिन्होंने इसके अनुसार आचरण किया, उनके नाम हजारों वर्ष बीत जाने पर भी आज आदर के साथ लिए जाते हैं। समय परिवर्तन से इस प्रकार के ब्राह्मणों की संख्या मध्यकाल में बहुत घट गई और अधिकांश ब्राह्मण कर्त्तव्य को भूलकर केवल अपने विशेष अधिकारों के लिए ही सचेष्ट रहने लगे। ऐसे समय में महाराष्ट्र प्रांत में श्री एकनाथ महाराज ने व्यावहारिक रूप से ब्राह्मणत्व के उदाहरण को उपस्थित करके देश और जाति की उन्नति में विशेष संत सहयोग दिया।

एकनाथ के जीवन की ऐसी अनेक घटनाएँ प्रसिद्ध हैं, जिनसे मालूम पड़ता है कि वे एक महान आत्मज्ञानी और विद्वान होने के साथ ही सहिष्णुता और सेवाभाव के मूर्तिमान अवतार भी थे।

एक बार कुछ शरारती लोगों ने एक ब्राह्मण को दो सौ रुपये का लालच देकर उनके पास भेजा कि वह किसी तरह इनको क्रोधित कर दे। जब वह इनके स्थान पर पहुँचा, तब ये मंदिर में पूजा कर रहे थे। वह आकर अचानक इनकी पीठ पर बैठ गया; पर क्रोधित होने के बजाय ये उससे कहने लगे, ''वाह भाई, मेरे पास इतने व्यक्ति आते हैं, पर तुम्हारे जैसा प्रेमी कोई नहीं आया, जो आते ही लिपट जाए।'' कुछ देर बाद वह इनके साथ भोजन करने बैठा, तो अचानक उछलकर भोजन परोसती हुई इनकी पत्नी गिरिजाबाई की पीठ पर बैठ गया। यह देखकर ये हँसने लगे और कहा, ''देखना, यह बड़ा बालक पीठ से गिरकर चोट न लगा ले।'' गिरिजाबाई ने भी हँसकर उत्तर दिया, ''मुझे बच्चे को पीठ पर लेकर काम करने का अभ्यास है, मैं इसे गिरने नहीं दूँगी।'' अंत में अत्यंत लज्जित होकर उसने पैरों में गिरकर इनसे क्षमा माँगी और कहा, ''मैंने आवश्यकतावश कुछ लोगों के कहने से ऐसा अनुचित व्यवहार किया।'' एकनाथ जी ने स्वयं ही उसकी आवश्यकता की पूर्ति कर दी।

भारतवर्ष में अछूत जाति वालों की दशा आजकल भी बड़ी हीन है। कुछ सौ वर्ष पूर्व महाराष्ट्रीय समाज में उनकी स्थिति और भी शोचनीय थी; पर एकनाथ जी उच्च कुल के ब्राह्मण होते हुए भी किसी से घृणा व उपेक्षा का व्यवहार नहीं करते थे, वरन सबके साथ 'आत्मवत् सर्वभूतेषु'के सिद्धांत का ही पालन करते थे। एक दिन उनके पूर्वजों का

श्राद्ध था, इसलिए गिरिजाबाई ब्राह्मण-भोजन के लिए उत्तम पकवान बना रही थीं। उसी समय कुछ अछूत जाति के व्यक्ति उनके घर की बगल में होकर निकले और पकवानों की खुशबू आने से आपस में चर्चा करने लगे, ''हम लोगों का ऐसा भाग्य कहाँ जो ऐसे पकवान पा सकें।''

संयोगवश यह बात घर के एक कमरे में बैठे एकनाथ जी के कानों में सुनाई दे गई। उन्हें इन लोगों की दुर्दशा पर बड़ी दया आई। उनको घर में बुलाकर अच्छी तरह भोजन करा दिया। इसके पश्चात् रसोई घर और समस्त बरतनों को फिर खूब अच्छी तरह साफ करके ब्राह्मणों के लिए दोबारा रसोई बनाई। पर उनके लिए बनाया गया भोजन अछूतों को खिला देने की बात सुनकर ब्राह्मण ऐसे नाराज हुए कि उन्होंने खाने से इनकार कर दिया। एकनाथ जी के बार-बार आग्रह करने पर भी वे राजी न हुए, तो उन्होंने अपनी लाचारी बताकर पितरों का आह्वान किया। उनकी हार्दिक भावना को देखकर पितृगण सशरीर वहाँ उपस्थित हो गए ओर उन्होंने भोजन ग्रहण किया। यह देखकर हठधारी ब्राह्मण बहुत पछताए और क्षमा-प्रार्थना करने लगे।

इसी प्रकार पैठण में रहने वाली एक वेश्या इनके घर कभी-कभी कथा सुनने आ जाया करती थी। एक दिन उसने इनके मुख से भागवत में वर्णित पिंगला नाम की वेश्या का आख्यान सुना, जिससे उसको वैराग्य हो गया। वह बार-बार यही विचार करने लगी, ''मैं कैसी पापिनी-अभागिनी हूँ जो जीवन भर इन रक्त, मांस,विष्ठा, मूत्र के पिंड परपुरुषों का आलिंगन करने में ही लगी रही। कभी अंतरात्मा में रहने वाले भगवान का ध्यान भी नहीं किया।'' इसी प्रकार रोती और पश्चाताप करती वह घर में ही पड़ी रही। वह एकनाथ जी का स्मरण करने लगी। विचार करने लगी कि क्या वे मुझ जैसी पापिनी को अपनी चरण-रज प्रदान करेंगे? एक दिन जब वह इस प्रकार विचार कर रही थी, तो उसने उसी समय एकनाथ जी को गोदावरी में स्नान करके अपने घर के पास से जाते हुए देखा। वह दौड़ती हुई आई और कहने लगी, ''महाराज! क्या आप इस पापिनी के घर को अपनी चरण-रज से पवित्र कर सकते हैं?'' एकनाथ जी ने सहज भाव से कहा, ''इसमें कौन-सी कठिनाई है।'' वे घर के भीतर गए और उनके पहुँचते ही वहाँ का पापपूर्ण वातावरण नष्ट होकर सात्त्विक भाव का संचार होने लगा। वेश्या ने उनसे 'राम-कृष्ण-हरि' का मंत्र ग्रहण किया और फिर जीवन के अंत तक भगवान के ध्यान और पुण्य कर्मों में ही समय लगाती रही।

इस प्रकार एकनाथ जी ने अपने उदाहरण द्वारा अपने समकालीन लोगों को सच्चे ब्राह्मणत्व का आदर्श दिखाया कि केवल बाह्य शुद्धाचार और पूजा-पाठ से ही मनुष्य ब्राह्मण नहीं बन सकता; वरन उसका असली कर्त्तव्य तो नीची दशा में पड़े प्राणियों को ऊँचा उठाकर कर पुण्य-मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना है।

पृष्ठ ३१ का शेष ...**(गीता परिवार लखनऊ)**

उपयोग करते हुए एक नृत्य नाटिका ''भारत कल आज और कल'' का मंचन किया गया और शास्त्री नगर केन्द्र के अविरल, केशवानंद, विख्यात, शिवमणि, अभिषेक एवं रचना ने हास्य नाटिका ''दुर्वासा और द्रौपदी'' का मंचन किया गया।

कार्यक्रम के समापन में गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री आशु जी गोयल व श्री राजेन्द्र जी गोयल, श्री ताराचंद अग्रवाल अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा पुरुस्कार वितरण समारोह में सभी प्रतिभागी बालक-बालिकाओं, व कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् नववर्ष का प्रारम्भ भगवानराम संकीर्तन व हनुमान चालीसा पाठ से किया गया।

टीवी देखने या किसी क्लब जाने की बजाय लीला दर्शन, भगवन्नाम संकीर्तन व हनुमान चालीसा का पाठ करते हुए नववर्ष में प्रवेश निश्चित रूप से अधिक कल्याणकारी है यही इस प्रचलित नववर्ष उत्सव हेतु हमारा भाव रहा।

वस्तुतः हमारा मूल स्वभाव आनन्द ही है। – पूज्यपाद

भागवत भूषण गोलोकवासी पं. श्रीनाथ शास्त्री जी, पुराणाचार्य के गोलोकवास पर विनम्र श्रद्धांजलि

महापुरुषों का जीवन अपने आप में एक खुली किताब होता है। उनका सही परिचय तभी मिल पाता है, जब हमें उनके चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त हो। इसलिए पूज्य गुरुवर स्वनामधन्य भागवत भूषण पं.श्रीनाथ जी शास्त्री, पुराणाचार्य (पूज्य श्रीदादागुरुजी) का परिचय लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

अगस्त्य गोत्र विप्रवर माध्यान्दिनी शाखा में सप्तपुरी अन्तर्गत मथुरा नगरी में आश्विन कृष्ण तृतीया वि.सं. १९८० तदनुसार २९ सितम्बर १९२३ को आपका जन्म हुआ। आपके पिता गोलोकवासी श्री रतिराम जी मिश्र तथा माता श्रीमती गोपी देवी थीं। चार संतानों में एक बहन श्रीमती सावित्री देवी तथा अग्रज श्री गोपीनाथ जी एवं अमरनाथ ब्रह्मचारी जी के कनिष्ठ भ्राता के रूप मे आप सबके लाड़ले थे।

सन् १९५० में आयुर्वेद विषय से आपने ''आयुर्वेद विशारद'' की उपाधि प्राप्त की। वृन्दावन में कुछ समय अध्ययनोपरांत विद्या की नगरी काशी में जाकर आपने परम श्रद्धेय श्री राममूर्ति पौराणिक जी से शिक्षा ग्रहण करते हुए सन् १९५२ में आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की।

वृन्दावन आकर गुरुवर जी से सप्ताह कथा की शैली प्राप्त की एवं गुरु दीक्षा कोटा (राज.) के श्रद्धेय श्री देवकीनन्दन जी महाराज से प्राप्त की। आपने रामार्चा (श्री राम पूजन) भी अनेक बार कराया एवं अपने समय के मूधर्न्य विद्वान ब्रह्मलीन श्री अखण्डानन्द सरस्वती जी महाराज, पं. पू. श्री करपात्री जी महाराज, श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी महाराज, स्वामी श्री विष्णु आश्रम जी महाराज एवं सन्तों में श्री हरी बाबा जी महाराज, श्री उड़िया बाबा जी, पूज्या श्री आनन्दमयी माँ आदि को अनेक बार कथा सुनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। परम विद्वान श्री शुक्राचार्य जी के भागवत विद्यालय की शिक्षा प्रणाली से प्रेरित होकर आपके मन में एक भागवत विद्यालय के निर्माण की इच्छा हुई। जो सत्संकल्प सन् १९६४ में भगवद् कृपा से पूर्ण हुआ एवं आज भी श्रीधामवृन्दावन में यथा स्थान अनवरत चल रहा है। लगभग ७० वर्ष में आपने १५०० से अधिक कथायें रसिक जनों को पान करायी हैं।

अभी हाल ही में २२ अगस्त २०१५ को श्री तुलसी जयन्ती के अवसर पर सन्त श्री मोरारी बापू के द्वारा आपको ''व्यास अवॉर्ड'' से सम्मानित किया गया है। आप का कथन है कि में जो हूँ, वह सन्तों की कृपा से ही हूँ, मेरा अपना कुछ भी नहीं है।

आपके तीन पुत्र रत्न क्रमशः श्री देवेन्द्रनाथ शास्त्री, कृष्ण कुमार शर्मा एवं मनोज मोहन शास्त्री जी हैं। अब आपने अपने मध्यम सुपुत्र परम गौसेवाव्रती डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा के सुपुत्र श्री अनुराग कृष्ण शास्त्री (श्रीकन्हैया जी) को सम्पूर्ण दायित्व सौंपा है; जो कि आपके प्रिय पौत्र के साथ–साथ कृपापात्र शिष्य भी हैं। आपने अपने सारे गुण इनमें स्थापित कर दिये हैं।

एक सद्गृहस्थ के सम्पूर्ण दायित्वों का निर्वहन कर, ब्राह्मण बालकों के लिए भागवत शिक्षा की चिरस्थायी व्यवस्था कर, ''**गृहेऽपि पंचेन्द्रियनिग्रहस्तपः**'' इस शास्त्र वचन के अनुसार सारे सत्कर्मों का जीवनपर्यन्त अनुपालन करते हुए अपनी ९२ साल की अवस्था पूर्ण कर आपने विगत मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष षष्ठी तिथि गुरुवार विक्रम संवत् २०७२ अर्थात् १७ दिसम्बर सन् २०१५ को अपना पार्थिव शरीर परित्याग कर नित्य गोलोकवास की ओर प्रस्थान किया है।

अब हमारे पास आपके बताये हुए सत्कर्मों पर चलकर आपके लगाये इन शिक्षा रूपी पौधों की सही देखभाल करना ही जीवन का चरम लक्ष्य रह गया है। वस्तुतः महापुरुषों की कभी मृत्यु नहीं होती। वे तो अपने कर्तव्यों, उपदेशों तथा जीवन के आदर्शों से हमारे हृदय पटल पर नित्य जीवित रहते हैं। ऐसे अद्भुत, कर्मनिष्ठ, भागवत के परम उपासक, आजीवन लोककल्याण में निरत पूज्य शास्त्रीजी के चरणों में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, गीता परिवार, श्रीकृष्ण सेवा निधि, की ओर से सहस्रों प्रणामांजली अर्पित करते हैं।

भगवान की विस्मृति ही सबसे बड़ी विपत्ति है। – पूज्यपाद

सिंगापुर कथा ज्ञान यज्ञ : एक अनुभव!

परम पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री गोविंददेवगिरि जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न कथाओं में भाग लेने का सौभाग्य पहले मुझे कई बार प्राप्त हो चुका है किन्तु इस बार दि. ६ से ११ दिसम्बर १५ तक सिंगापुर में समुद्र में तैरते ''सुपर स्टार जेमिनी क्रूज'' में सम्पन्न **''भक्ति का महत्त्व एवं उसकी प्राप्ति के सुमार्ग''** विषय पर प.पू. महाराजश्री के प्रवचनों के श्रवण का तो आनन्द कुछ और ही था। ऊपर अनन्त नीला आकाश और नीचे सीमाहीन जल राशि के मध्य विशाल लहरों पर तैरता हमारा १२ मंजिला क्रूज भी एक खिलोने से अधिक कुछ नहीं लग रहा था। हमारा मन एक भय मिश्रित आनन्द के सागर में डूब-उबर रहा था। प.पू. गुरुदेव का सान्निध्य मानों हमें अभय प्रदान कर रहा था।

सागर नारायण का यह भव्य रूप हमें हमारे लघु होने का, एहसास दिला रहा था। वास्तविक जीवन में हम संसारी लोग कितने अभिमानी होते हैं। यहाँ पर समस्त अहंकार गलता सा लग रहा था। हमारा स्वयं से वास्तविक परिचय हो, संभवतः पू. गुरुदेव ने इसीलिये इस क्रूज-यात्रा को चुना हो?

सागर नारायण का यह भव्य रूप हमें हमारे लघु होने का, क्षुद्र होने का एहसास दिला रहा था। वास्तविक जीवन में हम संसारी लोग कितने अभिमानी होते हैं। यहाँ वर समस्त अहंकार गलता सा लग रहा था। हमारा स्वयं से वास्तविक परिचय हो, संभवतः पू. गुरुदेव ने इसीलिये इस क्रूज-यात्रा को चुना हो?

दिनांक ७ दिसम्बर से पू.गुरुदेव ने नारद भक्ति सूत्र का अमृतपान हमें कराना आरम्भ किया। रोज प्रातः एक सत्र होता। इसमें पू. गुरूदेव ने हमें भक्ति का अर्थ, प्रकार एवं विधि के विषय में विस्तार पूर्वक बताया। पूज्यश्री ने बताया कि संसार के प्रति आसक्ति को प्रेम और भगवान के प्रति तीव्र आसक्ति को भक्ति कहते हैं। सांसारिक प्रेम अस्थाई और क्षण भंगुर है जबकि भक्ति स्थाई एवं अमृततुल्य होती है। इसी के माध्यम से मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है।

इस यात्रा के दौरान हम पेनांग, पार्टइलांग, मलाका आदि कई स्थानों पर भी गये। पूरी यात्रा में सभी सहयात्री एक-दूसरे की पूरी सहायता करते रहे। नये-नये लोगों से परिचय हुआ।

५ रात ६ दिन के बाद नौका से बिदा हो हम सिंगापुर गये। वहाँ ३ दिन विभिन्न स्थलों के दर्शन के दौरान हमने नाईट सफारी, सेन्टेसो यूनिर्वसल स्टुडियो, वॉटर अंडर वर्ड और डोलफिन शो देखा। जहाँ नाईट सफारी और वॉटर अंडर वर्ड में हमारा मन रखते हुए पू. गुरुदेव भी सम्मिलित हुए।

सिंगापुर निवासी श्री राठी जी ने लक्ष्मी नारायण मंदिर में पू. गुरुदेव का सत्संग, आयोजित किया था। उसका भी लाभ हमें मिला। भगवद्गीता, सनातन धर्म हम हिंदुओं का गौरव है यह कहते वक्त जब पू. गुरुदेव ने यह कहा – समग्र विश्व ही कुटुम्ब स्वरूप है पर माता तो एक ही होती है और वो है हमारी भारत माता – यह सुनते ही पूरा हॉल भारत माता की जय जयकार से गूँज उठा। विदेश में बैठकर भारत माता की जय जयकार करते वक्त हर एक का चेहरा अभिमान से खिल उठा! सत्संग के बाद राठी जी ने महाप्रसाद का आयोजन किया था। सबने उसका भी आनंद लिया।

१४ दिसम्बर को हम सब ढ़ेरों यादों के साथ वापस जल्द ही पू. गुरुदेव का सान्निध्य मिले इस आस में हमने अपनी मातृभूमी की और प्रस्थान किया।

सौ. रूपाली मालपाणी, धुलिया

मानव जीवन में, भक्ति निरंतर विकास की अवस्था है। – पूज्यपाद

गीता साधना शिविर (स्वर्गाश्रम)

सोमवार, दिनांक ११ जुलाई से सोमवार, १८ जुलाई २०१६ तक

अधिसूचना

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित 'गीता-साधना-शिविर' अब साधकों का प्रधान आकर्षण बन गया है। भगवद्‌गीता भारतीय संस्कृति, धर्म तथा अध्यात्म साधना की मुख्य आधारशिला है। वेद-वेदांत की संपूर्ण शिक्षा का सार गीता है। **गीता का अध्ययन करना, इसे ठीक से समझने का प्रयास करना और इसकी साधना प्रणाली को दैनिक जीवन में उतारने की प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करना साधकों के लिये आसान हो जाए, इस हेतु गीता साधना शिविर का आयोजन किया जाता है।**

प्रातःस्मरण, योगासन, प्राणायाम, ध्यान, गीता-अध्ययन, प्रवचन, प्रश्नोत्तरी, चिंतनिका, संकीर्तन आदि के साथ-साथ नित्यकर्म शिक्षा (देवपूजा, संध्योपासना इत्यादि) के कारण आधुनिक एवं पारंपरिक सभी प्रक्रियाओं का सुंदर समन्वय होने से यह अपने ढंग का अनूठा शिविर होता है। ऐसे शिविर मुख्यतः पू. गुरुदेव के अनुगृहीत दीक्षा प्राप्त साधकों के लिये आयोजित किएजाने पर भी; स्थान की उपलब्धता के आधार पर कुछ अन्य जिज्ञासुओं को भी प्रवेश मिल जाता है। साधकों की संख्या सीमित रखी जाती है।

आगामी **११ जुलाई से १८ जुलाई, २०१६ तक** की अवधि में शिविर का आयोजन वानप्रस्थ आश्रम (स्वर्गाश्रम), ऋषिकेश में किया जाना निश्चित हुआ है। **इच्छुक साधक अन्तिम पृष्ठों पर प्रकाशित फार्म पत्रिका से निकाल कर तथा उसे भर कर ०१ जून, २०१६ से पूर्व पुणे कार्यालय को भिजवा देवें।** विलम्ब से प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जावेगा। नियमानुसार अग्रक्रम से प्रवेशिका भेजी जायेगी-तभी अपना स्थान आरक्षित समझना चाहिये।

कार्यालय पत्राचार
गीता साधना शिविर, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल,
३, धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंटस्,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे – ४११०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९
-: संपर्क :-
श्री दत्ताजी खामकर, (मो. ७७०९१०३२९३)

।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

महर्षि वेदव्यास पूजन एवं साधक सम्मेलन

दि. १८ जुलाई एवं १९ जुलाई, २०१६

।। स्नेह – निमंत्रण ।।

कार्यक्रम स्थान : वानप्रस्थ आश्रम (स्वर्गाश्रम), ऋषिकेश

बन्धुवर,

सप्रेम जय श्रीकृष्ण !

आपको यह सूचित करते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का गुरुपूर्णिमा महोत्सव एवं संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल का साधक सम्मेलन वानप्रस्थाश्रम, स्वर्गाश्रम में आयोजित किया जा रहा है। परम श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी (आचार्य श्री किशोरजी व्यास) महाराज गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर हमारे बीच होंगे। इस उत्सव में आप साग्रह आमंत्रित हैं।

भवदीय

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान ***संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल***

★ साधक सम्मेलन ★

(सोमवार, दिनांक १८ जुलाई, २०१६)

दोपहर	:	४.०० से ४.३० सामूहिक जपानुष्ठान ४.३० से ५.३० पू. महाराजश्री के प्रवचन/ ५.३० से ६.०० संवाद, ६.३० से ७.३० गंगा दर्शन–स्नान
रात्रि	:	७.३० से ९.०० भोजन /९.०० से १०.०० स्नेह मिलन, गुणदर्शन/संवाद
विशेष	:	सभी साधक कृपया १८ जुलाई, २०१६ दोपहर ३ बजे तक आयोजन स्थल पर पहुँच जाएँ।

★ महर्षि वेदव्यास पूजन ★

(मंगलवार, दि. १९ जुलाई २०१६)

महर्षि वेदव्यास जी भगवान् नारायण की ज्ञानकला के अवतार हैं, समस्त प्राचीन ऋषिमुनियों के प्रतिनिधि हैं, सनातन धर्म के समस्त संप्रदायों के परमाचार्य हैं, भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च उद्गाता हैं। वे गुरु–तत्त्व का साकार विग्रह हैं। संपूर्ण भारतीय संस्कृति ने उन्हें अपने गुरु रूप में स्वीकार किया है। कृतज्ञतापूर्वक उनका स्मरण–पूजन हमारा सांस्कृतिक उत्सव है। 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के वार्षिकोत्सव के रूप में यह मंगल–समारोह **इस वर्ष गंगामैया के तट पर स्वर्गाश्रम में स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज की प्रेरक उपस्थिति में मनाया जाएगा।**

'मेरे पन' का बोझ ही संसार है, उसी से छुटकारा पाना है। – पूज्यपाद

सभी भाविक-भक्तों से अनुरोध है कि इस उत्सव में सहभागी होकर पुण्यलाभ अर्जित करें।

कार्यक्रम

प्रातः : ५.०० प्रातःस्मरण/७.०० से ७.३० : उपासना, प्रार्थना/७.३० से ८.३० : अल्पाहार/ ८.३० से १० : अभिषेक, महापूजा/१०.३० से ११.३० : हवन-संकीर्तन/ ११.३० से १२ : कार्यनिवेदन, आशीर्वचन तथा आरती, दर्शन एवं समर्पण/

दोपहर : १२.०० से १.०० तक गुरुदर्शन, समर्पण/१.०० से २.३० महाप्रसाद/३.०० साधक प्रस्थान

इस संपूर्ण कार्यक्रम के आयोजक यजमान हैं :

श्री दधिमथी सेवा ट्रस्ट

१) श्री. सोहनलालजी दायमा (हैदराबाद)
२) श्री. ओमप्रकाशजी दायमा (निजामाबाद)
३) श्री. आर. के. व्यासजी (कोलकाता)
४) श्री. रायचंदजी दायमा (अहमदाबाद)

संपर्क :- श्री. हरिनारायणजी व्यास (हैदराबाद) – ९८४८०३०९५०

नोट :- गुरुपूर्णिमा संबंधी जानकारी, हरिहर भक्ति महोत्सव के सम्पर्क सूत्रों से भी प्राप्त की जा सकती है।

।। श्री हरिः ।।

श्री हरि-हर भक्ति महोत्सव

बुधवार दि. २० जुलाई, २०१६ से मंगलवार दि. ९ अगस्त २०१६ तक के अतिरिक्त महोत्सव के अंतर्गत होने वाले विभिन्न उपासना कार्यक्रम

प्रातः ६ से ९ श्री गंगा लक्ष्मीनारायण यज्ञ

प्रातः ७ से ९ चतुःसहस्र पार्थिव शिवलिंगार्चन/ ७ से ९ चतुःसहस्र श्रीयंत्र कुंकुमार्चना एवं शिवपूजा (सहस्र बिल्वार्चन), श्रीकृष्णपूजा (सहस्र तुलसीअर्चन)आदि

प्रातः ९.३० से १२ **भक्ति दर्शन-संतकथा**

अपराह्न ३.०० से ३.३० श्री शिवमहिम्न एवं विष्णुसहस्रनाम पाठ

३.३० से ६ **भक्ति दर्शन-संतकथा**

सायं ५.३० से ७.३० बजे तक लघुरुद्र अभिषेक

रात्रि ८.१५ से ९.०० श्रीराधा-कृष्ण दोलोत्सव (झूला) दर्शन, पदगान एवं आरती, श्री रामचरित मानस पारायण

रात्रि ९.०० से ९.३० बजे तक प.पू. गुरुदेव से शंका समाधान

परम पावनी गंगामैया का पावन तट, पवित्रतम श्रावणमास, शुकस्वरूप स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी (आचार्य किशोर जी व्यास) के श्रीमुख से पूर्ण विस्तार सहित हिन्दी में **त्रिसाप्ताहिक श्री भक्त चरित्र कथा** तथा सवालक्ष पार्थिव **शिवलिंगार्चन, श्रीयंत्र कुंकुमार्चन, बिल्वार्चन, तुलसी अर्चना आदि, नित्य प्रदोष वेला में लघुरुद्राभिषेक, सामूहिक स्तोत्र पाठ, पदगान एवं ठाकुर श्रीश्यामा-श्याम का झूलादर्शन** तथा वानप्रस्थ आश्रम का सुखद निवास, इन सबके कारण यह भक्ति महोत्सव वैकुंठधामतुल्य भावमय वातावरण में संपन्न होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

इस सरस भक्ति महोत्सव में सम्मिलित होकर **श्री भक्त चरित्र कथा** का श्रवण करना एवं विविध पूजा-अर्चनाओं में सहभागी होना परम पुण्यवान के लिये ही संभव है। आपसे हार्दिक अनुरोध है कि आप सपरिवार इसमें सहभागी हों एवं अपने परिचितों को भी यह जानकारी देकर इस पुण्यार्जन के लिये प्रेरित करें।

★ सूचना संकेत ★

१) पार्थिव सहस्र शिवलिंगार्चन, लघुरुद्रअभिषेक, श्रीयंत्र-कुंकुमार्चन, बिल्वार्चन, तुलसी अर्चन तथा झूला आरती के दैनिक यजमान आप बन सकते हैं। हर आराधना की अलग-अलग सेवा (भेंट) निर्धारित रहेगी; जिसकी जानकारी श्री. विश्वनाथजी राठी, कोलकाता से (मो.न. नीचे देखें) प्राप्त की जा सकती है।

२) कथा अथवा आराधना, अभिषेक, अर्चना के यजमानों को अपने साथ कुछ भी सामग्री लाने की आवश्यकता नहीं है, पर पूजा के उपयुक्त भारतीय परिधान की अनिवार्यता के कारण अपने परिधान अवश्य लायें।

भोजन व्यवस्था :-

३) सशुल्क भोजन व्यवस्था सभी की वहीं की जा रही है। संयोजक - श्री चन्द्रकान्त केले, धुलिया एवं श्रीमती ललितादेवी मालपाणी जी परिवार, संगमनेर

४) भोजन व्यवस्था सभी अपनी-अपनी भी कर सकते हैं। सभी के निवासस्थान पर रसोई के बर्तन उपलब्ध हैं, गैस की व्यवस्था हो सकती है।

५) **वानप्रस्थ आश्रम के भोजनालय में भी कूपन पद्धति से** सात्त्विक भोजन, चाय तथा अल्पाहार उपलब्ध रहेगा।

६) निवास एवं भोजनविषयक उपरोक्त नियम सभी कथा यजमान, श्रोता एवं सत्संगी भाई-बहनों के लिये एक समान ही रहेंगे।

७) श्रावण मासिक कथा में तपस्या के लिये पधारना है - यह भान रहें। नित्योपयोगी चीजें तथा आवश्यक दवा-औषधि साथ रखें, पर मूल्यवान वस्तुएँ तथा आभूषण आदि चीजें बिल्कुल न लावें।

८) किसी भी प्रकार के यजमान न बनने पर भी सभी भाविक कथा श्रवण, पूजा दर्शन, स्तोत्र पाठ, पारायण-कीर्तनादि सभी कार्यक्रमों में श्रद्धापूर्वक निःसंकोच सहभागी हो सकते हैं।

९) अपनी भेंट, दान-दक्षिणा आदि आर्थिक सेवा कृपया '**श्रीकृष्ण सेवा निधि**' ट्रस्ट के नाम से प्रदान कर रसीद प्राप्त करें। श्रीकृष्ण सेवा निधि, धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११०१६, दूरभाष ०२०-२५६५२५८९

१०) इस संपूर्ण आयोजन का दायित्व एवं निर्णय के सभी अधिकार संयोजन समिति के अधीन रहेंगे। किसी भी विषय में अधिक जानकारी के लिये संयोजन समिति अथवा व्यवस्थापक मंडल से संपर्क करें।

संपर्क :

● श्री चंद्रकांत जी केले काका (धुलिया), ०९४२२२८५४६८ ● श्री. विश्वनाथजी राठी (कोलकाता) ९३३१०४००५५ ● श्री नारायणदास जी मारू (सूरत), ०९४२७८३५५०९, ● श्री बृज मोहनजी अग्रवाल (दिल्ली) ०९३५००४८३० ● डॉ. द्वारकादास जी लड्डा (मानवत) ९४२३१४१३१८

।। श्रीहरिः ।।

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल एवं समन्वय परिवार प्रणीत

गीता साधना शिविर

(वानप्रस्थ आश्रम)

स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश (उत्तराखंड)

सोमवार, दि. ११ जुलाई से सोमवार, दि. १८ जुलाई २०१६ तक

आवेदन-पत्र

प्रति, दि. / / २०१६

श्री संयोजक महोदय,

जय श्रीकृष्ण!

मैं आपके द्वारा आयोजित 'गीता साधना शिविर' में सम्मिलित होना चाहता/चाहती हूँ। मेरे विषय में आवश्यक जानकारी निम्नानुसार है। कृपया मुझे शिविर में प्रवेश दें।

भवदीय,

हस्ताक्षर-----------------

व्यक्ति-परिचय

नामः श्री/श्रीमती ---

पिता / पति का नाम ---

पत्राचार का संपूर्ण पता ---

– ------------------------- पिनकोड --------------------

दूरभाष : निवास-------------------- कार्यालय -------------------

(एस.टी.डी. कोड) ------------------ मोबाईल नं. ------------------

व्यवसाय ----------------------- शिक्षा --------------------

आयु. ------------------------ दीक्षा वर्ष -------------------

मातृभाषा----------------------- अन्य ज्ञात भाषाएँ ---------------

प्रवृत्ति परिचय

- क्या आप सत्संग, नित्य साधना, जप, पूजापाठ, योगाभ्यास आदि में से कुछ करते हैं? ....हाँ/नहीं
- यदि हाँ, तो कृपया संक्षेप में जानकारी दें। ------------------------------
- सद्‌गुरु के रूप में आपकी श्रद्धा किसमें है? -------------------------
- गुरुमंत्र का जप प्रतिदिन कितनी माला करते हैं? ---------------------------
- इस शिविर में सहभागी होकर आप क्या चाहेंगे? ------------------------
- कृपया एक नाम लिखें। आपके इष्ट देवता -------------------------------
- आदर्श व्यक्तित्व ---
- आपके प्रिय संत ---------------------प्रिय ग्रंथ ------------------
- आपका प्रिय तीर्थ --------------------प्रिय लेखक ----------------

  आदर्श महापुरुष --------------------प्रिय कवि ----------------
- क्या आपकी कोई स्वास्थ्यविषयक समस्या है? (जैसे मधुमेह, रक्तचाप, हृदयविकार, आम्लपित्त)

- क्या आप किसी मानसिक समस्या से ग्रस्त हैं? (जैसे निद्रानाश, तनाव, नैराश्य, चिंता)

- क्या आप संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के 'गीता साधना शिविर' में इससे पहले उपस्थित रहे हैं? हाँ/नहीं।
- यदि हाँ, तो कितने एवम् कौनसे शिविरों में ---------------------------

  ----
- पूर्व शिविर के अनुभवानुसार इस शिविर की व्यवस्था में सुधार हेतु कुछ सुझाव/अपेक्षा हो तो लिखें।

- क्या आप इस प्रकार के अन्य किसी साधना शिविर में उपस्थित थे? -----------हाँ/नहीं।
- यदि हाँ, तो कितने एवम् कौनसे शिविरों में ---------------------------
- साथ में रु. ३०००/– का पुणे में देय '**संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल**' के नाम का बैंक का अकाऊंट पेयी डिमांड ड्राफ्ट क्र. ________________ दि. ________________ का संलग्न है।

हस्ताक्षर__________________

आवेदन पत्र कृपया निम्नलिखित पते पर भेजें:

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल : धर्मश्री कार्यालय, मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे–४११०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९/२५६७२०६९

नोट :– अधिक आवेदन पत्रों की आवश्यकता होने पर इसकी फोटो स्टेट प्रति भी भेजी जा सकती है।

शिविर से प्राप्त जानकारी अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाएँ।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान - दानदाता सूची (दिनांक ०१/१२/२०१५ से दिनांक ३१/०१/२०१६ तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

मुंबई: श्री. विवेकजी केले, **मदुरै:** श्री. आलोकजी राठी परिवार

रु. ५० हजार से १ लाख

चंद्रपुर: श्रीमती उमियाबाई मोहता, श्री. शरदजी लड्डा

रु. १० हजार से २५ हजार

कोलकाता: श्री. जी. एस. झंवर परिवार, **दिल्ली:** श्री. आदितजी सुनेजा, **सोलापुर:** मे. सुयश विद्यालय, **सिकंदराबाद:** श्री. रामगोपालजी टिबरेवाला, श्री. मेघराजजी अरुणकुमार, **हैदराबाद:** श्री. बद्री विशालजी अग्रवाल, **मुंबई:** श्री. जयजी ठर, **इंदौर:** श्रीमती सावित्री जाजू, श्री. रमेशजी मितल, **अकोला:** श्री. लक्ष्मी नारायणजी शर्मा, **गुवाहाटी:** श्री. हनुमान प्रसादजी बजाज, **हैदराबाद:** मे. अमरचंद दायमा मेमो. ट्रस्ट, **चिंगलपेट:** श्री. रामजीवनजी मुंदडा, **जबलपुर:** डॉ. श्री. जितेंद्रजी जामदार, **चंद्रपुर:** श्री. शिवराजजी सारडा, मे. हर्षिका इंजीनियरिंग, सौ. लीला उपाध्याय, श्री. सुधाकरजी उपगन्लावार, श्री. मोरेश्वर समृत्त्वार, श्री. नथमलजी सारडा, सौ. सूरजकलादेवी जाजू, डॉ. श्री. कुबेर, श्रीमती सुनीता बंग, श्री. प्रकाशजी टिकणायत, श्री. ताराचंदजी काबरा, सौ. भारतीबेन रायचुरा, श्री. गोपालजी तोष्णीवाल, सौ. सविता व्यवहारे, श्री. घनश्यामजी मुंदडा, श्रीमती सुनिता उपगन्लावार, श्री. बुधमलजी सोनी, **अमरावती:** श्री. राम स्वरूपजी हेडा, **नागपुर:** श्री. विद्येशजी वर्णेकर

रु. ५ हजार से १० हजार

सोलापुर: श्री. मधुकरजी फडणीस, मे. मालू प्रीस्टेस कॉंक्रीट प्रॉडक्टस, श्री. डब्ल्यू. सूर्यप्रकाशम्, श्री. ओमप्रकाशजी लड्डा, **वरणगांव:** श्रीमती शारदा चौधरी, **बीड:** कु. पद्मजा कदम, **नासिक रोड:** मे. एस. प्लायबॉड प्रा. लि., **कोलकाता:** श्री. नीरजकुमारजी कजरिया, **मुंबई:** श्री. महेशजी बापट, **इंदौर:** श्रीमती प्रतिभा मिश्रा, **दिल्ली:** श्रीमती नीता टंडन, **पठानकोट:** श्रीमती स्नेहलता महाजन, **चंद्रपुर:** श्री. हनुमान सिंह चव्हाण, श्री. अशोकजी कुलकर्णी, श्री. राजेश्वरजी अलूरवार, श्रीमती यशोदाबाई भट, श्री. मोहनजी मुंदडा

।। श्रीहरिः ।।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज के

✻ आगामी कार्यक्रम ई. स. २०१६ ✻

दिनांक	स्थान	कथा
१२-०२ से १९-०२-१६	वडोदरा (गुज.)	महाभारत कथा
२०-०२ से २५-०२-१६	श्रीधाम सोमनाथ (गुज.)	भागवत कथा
२७-०२ से ०४-०३-१६	नोखा मंडी (राज.)	भागवत कथा
०५-०३ से ०७-०३-१६	श्री पुष्करराज	शिवरात्रि उत्सव
१०-०३ से १६-०३-१६	आलंदी (महा.)	ज्ञानेश्वरी भावकथा
०८-०४ से १६-०४-१६	पथमेढा (राज.)	गोकृपा-महोत्सव
१८-०४ से ३०-०४-१६	विदेश	धर्मयात्रा
०५-०५ से २१-०५-१६	उज्जैन	सिंहस्थ कुंभ पर्व
२७-०५ से ०५-०६-१६	स्वर्गाश्रम (उ. खंड)	भागवत कथा
०७-०६ से १३-०६-१६	स्वर्गाश्रम (उ. खंड)	श्रीकृष्ण भक्तिविलास कथा
११-०७ से १८-०७-१६	स्वर्गाश्रम (उ. खंड)	गीता साधना शिविर
१९-०७-१६	स्वर्गाश्रम (उ. खंड)	गुरुपौर्णिमा
२०-०७ से ०९-०८-१६	स्वर्गाश्रम (उ. खंड)	हरिहर भक्ति महोत्सव

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

मनुष्य काम करने से नहीं अपितु नहीं करने से जल्दी मरता है। – पूज्यपाद